मूल्यः 20/-

(कला-संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष-2, अंक- 8 सितम्बर-2025

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

बारह प्रकार के होते हैं - "श्राद्ध"

- हिंदी भविष्य में रोजगार के नए रास्ते खोलेगी
- बाढ़ः प्राकृतिक आपदा या मानवजनित त्रासदी?
- भारत का सेमीकंडक्टर बाजार 100 बिलियन डॉलर से अधिक होने का अनुमान

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएँ

An ISO 9001 : 2008 Certified Centre

DISHA

Direction towards Drugs Free Life

[Recognised by Ministry of Social Justice & Empowerment (Govt. of India), I.L.O., U.N.O.D.C., Govt. of Bihar & Utter Pradesh]

Supported by Shrestha Health Care & Mgt. Sol. Pvt. Ltd.

INFORMATION BOOKLET

दिशा

नशा विमुक्ति–सह–पुनर्वास केन्द्र

DISHA

De-Addiction-cum-Rehabilitation Centre

For Female : 157, Patliputra Colony, Patna-800013

For Male : 26, Near Sahyog Hospital, Paltiputra Colony, Patna - 800013

Tel. : 0612-2525647, 2520204 | Mob. : 9334100373, 9334071271

डा० दिवाकर तेजस्वी

एम.बी.बी.एस. (गोल्ड मेडिलिस्ट), एफ.सी.सी.पी., एम.सी.एच. पी-एच.डी.

जेनरल फिजिशियन एवं टी.बी. रोग विशेषज्ञ

मेडिकल डायरेक्टर, पहल एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन-यू.एस.ए.

पूर्व विभागाध्यक्ष, हेल्थ ऑफिसर डिपार्टमेंट, अलेमाया युनिवर्सिटी (इथोपिया)

मेम्बर : अमेरिकन अकादमी ऑफ फैमिली फिजिशियन (यू.एस.ए.)

ऑस्ट्रेलिशियन सोसायटी ऑफ एच.आई.वी. मेडिसिन (आस्ट्रेलिया), अन्तर्राष्ट्रीय एड्स सोसाईटी

अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा सम्मान 2005 : इंटरनेशनल बायोग्राफिकल सेंटर, कैम्ब्रीज (यू.के.)

एड्स फाइटर अवार्ड -2009 द्वारा बिहार राज्यपाल।, लार्ड बाडेन पॉवेल नेशनल अवार्ड-2015, आरोग्य भारती अवार्ड - 2019, कोरोना वरियर्र अवार्ड - 2020 (रोटरी क्लब, कंकड़बाग, पटना)

मरीज देखने का स्थान एवं समय

क्लिनिक - 1

सुबह 11:45 से 01:30 बजे एवं
शाम 07.00 से 08:00 बजे तक
रविवार बंद
नेमा प्लेस, डा.के.के. शरण लेन
एक्जीविशन रोड, पटना-1
Ph. : 0612-2206964

क्लिनिक - 2

सुबह 09:45 से 11:30 बजे एवं
शाम 05.15 से 06:30 बजे तक
रविवार : 10.00 से 11.30 बजे तक
M.I.G.-161, लोहियानगर,
कंकड़बाग, पटना-20
Ph. : 0612-2351771, 3565971

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष–2, अंकः 08 सितम्बर, 2025

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**

बारह प्रकार के होते हैं - "श्राद्ध"

02

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार– 800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006/7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

रजि. कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com
वेबसाइट : www.bolozindagi.com

सभी पद अवैतनिक

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

1. हिंदी भविष्य में रोजगार के नए रास्ते खोलेगी 5
2. सरकार को चिंता है तो बस चालान की 6
3. भारत का सेमीकंडक्टर बाजार 100 बिलियन डॉलर से अधिक होने का अनुमान 7
4. डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण 9
5. बाढ़ः प्राकृतिक आपदा या मानवजनित त्रासदी? 11
6. नेपाल में सोशल मीडिया पर बैन के बाद हिंसक विरोध प्रदर्शन 13
7. मौन से संवाद तक–आत्महत्या रोकने की पहल 14
8. अमेरिकी टैरिफ वार से निपटने की भारतीय राह 16
9. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान (NIOS) में होगी भोजपुरी की पढ़ाई 18
10. बरगद का पेड़ (कविता) 19
11. जीएसटी दरों में बदलाव : आत्मनिर्भर, सशक्त और न्यायपूर्ण व्यवस्था की ओर कदम 20
12. भाग्योदय का समय कैसे पता करें ? 22
13. पंजाब बाढ़ पीड़ितों की कैसे लौटेगी पटरी पर जिन्दगी 23
14. लोकतंत्र की चुनौती–राजनीति और मर्यादा 24
15. दिल, दिमाग और विचारों की पहेली साइकोसोमेटिक 25
16. न्यूट्रिला राइस 27
17. अब तक नहीं छपी किताबें (कविता) 28
18. भीषण बाढ़ विभीषिका (कविता) 28
19. मेरी मिर्जापुरी लाठी 29
20. स्विस फिल्म 'डायरी ऑफ अ वुमन' का ट्रेलर जारी, 12 सितंबर को होगी रिलीज 31
21. अहान शेट्टी भारत की पहली राष्ट्रीय त्रासदी से प्रेरित हॉरर फिल्म में अभिनय करेंगे 32

एक तरफ पितरों की पूजा दूसरी तरफ बुजुर्गों को सजा

नवरात्रि के पहले पितृपक्ष का समय आता है और यह 15 दिनों तक चलता है। हमारे शास्त्रों में पितृपक्ष की बहुत महत्ता है। इन दिनों हम अपने कुल खानदान के पितरों यानी गुजर चुके अपने घर के बुजुर्गों को सच्चे मन से याद करते हैं, सच्ची श्रद्धा से उनका पूजन करते हैं। उनका तर्पण करते हैं। उनके नाम पर गरीबों को खाना खिलाते हैं और ब्राह्मणों को दान देते हैं। पितृपक्ष के दिनों में हम कोशिश करते हैं कि ऐसा कोई भी कार्य ना करें जिससे हमारे पितरों को दुख व पीड़ा हो। मान्यता है कि इन दिनों हमारे पितर धरती पर किसी ना किसी रूप में हमारे बीच आते हैं इसलिए उनकी खुशी के लिए हम दान कर्म आदि को महत्व देते हैं, इन दिनों हम अपना आचरण शुद्ध रखते हैं और सदमार्ग पर चलने की कोशिश करते हैं।

दुनिया से गुजर चुके अपने बुजुर्गों को खुश करने के लिए तो हम इतना कुछ करते हैं लेकिन हास्यास्पद है कि हम अपने बीच जीवित बुजुर्गों की अवहेलना करते हैं, उनका निरादर करते हैं। अपने व्यवहार से उनको गहरी पीड़ा देते हैं। आज भी कितने घरों में बुजुर्गों की दशा दयनीय है, वे अपने ही घर में अपने बच्चों की दया पर पल रहे हैं। कितने बच्चे अपने ही बुजुर्ग मां बाप को बोझ समझकर उन्हें हमेशा के लिए वृद्धाश्रम में भेज देते हैं। कष्ट भोग रहे बुजुर्ग अपने आप को कोसते हैं कि क्यों हमने ऐसी नालायक संतान को जन्म दिया! यह कैसा आडम्बर है कि एक तरफ हम जीते जी अपने बुजुर्गों को मृत्युतुल्य कष्ट देते हैं तो वहीं दूसरी तरफ उनके गुजर जाने पर उनको याद करने और उनके नाम पर गरीबों को भोजन कराने का ढोंग करते हैं। ऐसा दोहरा चरित्र जीनेवालों के लिए तो पितृपक्ष कोई मायने ही नहीं रखता। ऐसे लोग जाने क्यों ये भूल जाते हैं कि वे भी एक दिन बूढ़े होंगे, उनकी भी संताने ठीक यही व्यवहार उनके साथ भी करेंगी, तब फिर वे किसे दोष देंगे ?

राकेश कुमार सिंह
संपादक

बारह प्रकार के होते हैं - ''श्राद्ध''

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

हिन्दू धर्म में श्राद्ध कर्म का विशेष महत्व है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि संस्कृति, परंपरा और पितृ ऋण की अभिव्यक्ति है। वेद, पुराण और स्मृतियों में श्राद्ध का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है। धर्मसिंधु के अनुसार, श्राद्ध के 96 अवसर बताए गए हैं, लेकिन भविष्य पुराण में श्राद्ध के बारह प्रकार विशेष रूप से उल्लेखित हैं। इन बारह प्रकार के श्राद्धों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि पितरों का स्मरण केवल पितृपक्ष में ही नहीं, बल्कि जीवन के अनेक अवसरों पर आवश्यक है।

नित्य श्राद्ध का आशय है प्रतिदिन किए जाने वाले तर्पण या गौ ग्रास का अर्पण। इसका स्वरूप बहुत सरल है। रोजाना भोजन से पहले भोजन का एक अंश निकालकर गाय, कुत्ते, पक्षियों या अन्य जीवों को अर्पित करना ही नित्य श्राद्ध कहलाता है। यह पितरों के प्रति सतत श्रद्धा का प्रतीक है। यह स्मरण कराता है कि जीवन केवल हमारे लिए नहीं है, बल्कि समस्त सृष्टि के लिए है।

पितृपक्ष में किया जाने वाला श्राद्ध नैमित्तिक श्राद्ध कहलाता है। अमावस्या तिथि का विशेष महत्व है। इस श्राद्ध में पिंडदान, तर्पण और ब्राह्मण भोज की व्यवस्था की जाती है। पितरों की आत्मा को शांति प्रदान करना। इस श्राद्ध से पितरों को स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है और वे वंशजों को आशीर्वाद देते हैं।

काम्य श्राद्ध किसी विशेष कामना की पूर्ति हेतु किया जाता है। जैसे संतान प्राप्ति, स्वास्थ्य, समृद्धि या व्यवसाय की वृद्धि के लिए। यह श्राद्ध इच्छाओं और पितरों के आशीर्वाद का सेतु है। कोई व्यक्ति संतान की कामना करता है, तो वह पितरों की तृप्ति के लिए श्राद्ध करता है।

मुंडन, उपनयन, विवाह आदि अवसरों पर किए जाने वाले श्राद्ध को वृद्धि श्राद्ध कहते हैं। इसे 'नान्दीमुख श्राद्ध' भी कहते हैं। किसी भी नए कार्य की सफलता हेतु पितरों का आशीर्वाद प्राप्त करना। जीवन की प्रत्येक नयी शुरुआत में पितरों को स्मरण करना।

अमावस्या या किसी पर्व के दिन किया जाने वाला श्राद्ध पार्वण श्राद्ध कहलाता है। इसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। अमावस्या को पितरों का प्रिय दिवस माना गया है। तर्पण और पिंडदान कर ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है।

जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो उसकी आत्मा को प्रेतगति से मुक्ति दिलाने के लिए उसके पिंड को पितरों के पिंड में मिलाया जाता है। इसे सपिंडन श्राद्ध कहते हैं। मृतक को प्रेत योनि से मुक्ति मिलती है और वह पितरों की श्रेणी में सम्मिलित हो जाता है। यह श्राद्ध मृत्यु के एक वर्ष के भीतर किया जाता है।

गौशाला में वंशवृद्धि और गोपालन की समृद्धि हेतु किया जाने वाला श्राद्ध गोष्ठी श्राद्ध कहलाता है। गाय हिन्दू धर्म में माता का स्थान रखती है। गौवंश की रक्षा और वंशवृद्धि के लिए

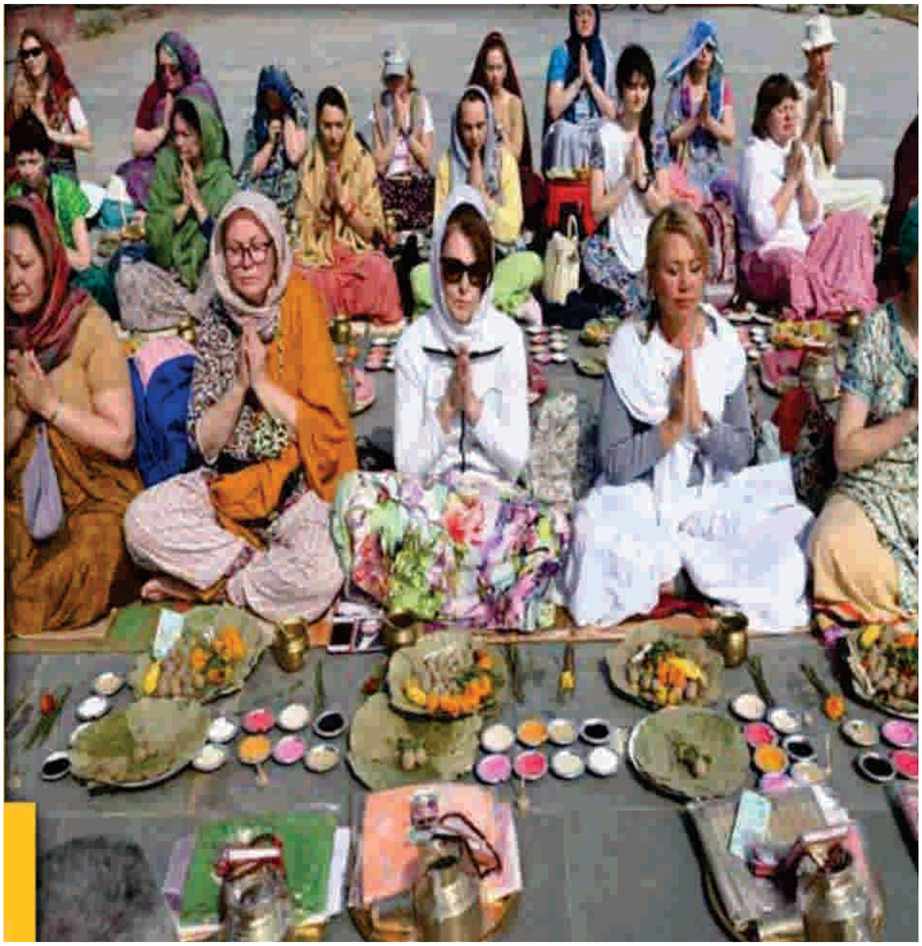

यह श्राद्ध आवश्यक माना गया है।

शुद्धयर्थ श्राद्ध प्रायश्चित स्वरूप होता है। व्यक्ति अपनी किसी भूल, पाप या अपवित्रता को दूर करने के लिए ब्राह्मणों को भोजन कराता है। आत्मशुद्धि और मानसिक शांति। पितरों और देवताओं के आशीर्वाद से पापों का क्षालन होता है।

गर्भाधान, सीमंत, पुंसवन आदि संस्कारों के समय किए जाने वाले श्राद्ध को कर्मांग श्राद्ध कहते हैं। हर संस्कार में पितरों की स्मृति और आशीर्वाद की कामना करते हैं। जीवन के हर चरण में पितरों की उपस्थिति और संरक्षण होता है।

सप्तमी तिथियों में हविष्यान्न (सादा भोजन) से देवताओं के लिए किया जानेवाला श्राद्ध दैविक श्राद्ध कहलाता है। देवताओं और पितरों दोनों की तृप्ति होती है। देवताओं को अर्पण के बाद पितरों के लिए तर्पण किया जाता है।

किसी भी तीर्थ यात्रा पर जाने से पहले या वहां पहुंचकर किए जाने वाले श्राद्ध को यात्रार्थ श्राद्ध कहते हैं। यात्रा की सफलता और पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है। तीर्थ यात्रा को पवित्र बनाने के लिए यह श्राद्ध आवश्यक है।

वंश और व्यापार की वृद्धि के लिए किया जाने वाला श्राद्ध पुष्ट्यर्थ श्राद्ध कहलाता है। जीवन में समृद्धि और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। वंश वृद्धि और व्यापार की उन्नति के लिए पितरों की कृपा प्राप्त करना होता है।

ऋग्वेद और यजुर्वेद में पितरों के लिए तर्पण का उल्लेख है। विष्णु पुराण, गरुड़ पुराण और भविष्य पुराण में श्राद्ध के अनेक संदर्भ मिलते हैं। यम स्मृति और धर्मसिंधु में श्राद्ध की विस्तृत व्याख्या है।

श्राद्ध कर्म के साथ–साथ पंचबलि या पंच ग्रास देने का विधान भी है। इसमें ब्राह्मणों के भोजन के साथ पाँच प्रकार के अन्न दान शामिल होते हैं जैसे– पृथ्वी तत्व का प्रतीक है गाय, जल तत्व का प्रतीक है कुत्ता, वायु तत्व का प्रतीक है कौए, अग्नि तत्व का प्रतीक है चींटी, यह संपूर्ण प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का भाव है। यह पंचतत्वों की संतुलित उपासना है।

आज के समय में लोग श्राद्ध को केवल एक कर्मकांड समझ लेते हैं, जबकि वास्तव में यह संस्कृति, परंपरा और प्रकृति के प्रति आभार का उत्सव है। श्राद्ध यह सिखाता है कि पूर्वजों के ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकते हैं। परिवार और वंश परंपरा के प्रति जिम्मेदारी है। पितरों के आशीर्वाद से जीवन में शांति और समृद्धि आती है।

श्राद्ध के बारह प्रकार हिन्दू धर्म की गहन आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक गहराई को दर्शाता है। नित्य श्राद्ध से लेकर पुष्ट्यर्थ श्राद्ध तक हर श्राद्ध का उद्देश्य पितरों की तृप्ति और वंशजों की समृद्धि है। यह केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि जीवन दर्शन है।

इस परंपरा का पालन कर न केवल पितरों को श्रद्धांजलि देते हैं, बल्कि प्रकृति, समाज और सृष्टि के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। श्राद्ध वास्तव में सांस्कृतिक धरोहर है, जो जीवन और मृत्यु के बीच एक अदृश्य सेतु का कार्य करती है।

❐

हिंदी भविष्य में रोजगार के नए रास्ते खोलेगी

✍ **संदीप सृजन**
संपादक– शाश्वत सृजन
ए–99 वी.ड़ी मार्केट, उज्जैन 456006

हिंदी, भारत की राजभाषा और विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिंदी न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है, बल्कि यह आधुनिक युग में रोजगार के नए द्वार खोलने की क्षमता रखती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहाँ बाईस आधिकारिक भाषाएँ हैं, हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में उभर रही है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग साठ करोड़ से अधिक है, जो इसे वैश्विक स्तर पर एक शक्तिशाली माध्यम बनाती है। लेकिन क्या हिंदी केवल साहित्य और संवाद तक सीमित है? बिल्कुल नहीं! भविष्य में यह डिजिटल क्रांति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शिक्षा, मीडिया, पर्यटन, अनुवाद और यहां तक कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार जैसे क्षेत्रों में रोजगार के अनगिनत अवसर प्रदान करेगी। आज के दौर में, जब वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति तेजी से हो रही है, हिंदी का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। नई शिक्षा नीति में हिंदी को प्रोत्साहन दिया गया है, जो युवाओं के लिए नई संभावनाएँ पैदा कर रही है।

वर्तमान में हिंदी से जुड़े रोजगार मुख्य रूप से शिक्षा, सरकारी नौकरियों, पत्रकारिता और प्रकाशन तक सीमित हैं लेकिन सरकारी क्षेत्र में हिंदी अधिकारी, अनुवादक और शिक्षक के पद उपलब्ध हैं। केंद्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में हिंदी के माध्यम से दस्तावेजीकरण और संचार का कार्य होता है। राजभाषा विभाग के अनुसार, भारत में लगभग दस लाख से अधिक लोग हिंदी से संबंधित नौकरियों में कार्यरत हैं।शिक्षा क्षेत्र में हिंदी स्नातक करने वाले युवाओं को स्कूलों और महाविद्यालयों में अध्यापक बनने का अवसर मिलता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक, हिंदी विभागों में प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या में पंद्रह प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पत्रकारिता में हिंदी समाचार चौनल और डिजिटल मंचों पर रिपोर्टर, एंकर और संपादक के पद उपलब्ध हैं।

प्रकाशन उद्योग में हिंदी पुस्तकों, पत्रिकाओं और ई–पुस्तकों की मांग बढ़ रही है। अमेजन और फ्लिपकार्ट जैसे मंचों पर हिंदी सामग्री की बिक्री में बीस प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई है। आज के डिजिटल युग में हिंदी कॉन्टेंट की मांग अंग्रेजी से पाँच गुना तेजी से बढ़ रही है। इस प्रकार, वर्तमान में हिंदी रोजगार के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती है, लेकिन भविष्य में यह और विस्तृत होगा। भविष्य का रोजगार डिजिटल दुनिया पर निर्भर है, और यहाँ हिंदी की भूमिका अहम है। इंटरनेट पर हिंदी सामग्री की खपत तेजी से बढ़ रही है। गूगल के अनुसार, भारत में पचास प्रतिशत से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हिंदी में खोज करते हैं। इससे डिजिटल विपणन, सामग्री निर्माण और सामाजिक मीडिया प्रबंधन में हिंदी विशेषज्ञों की मांग बढ़ेगी। डिजिटल सामग्री निर्माता के रूप में, यूट्यूब, इंस्टाग्राम और टिकटॉक पर हिंदी वीडियो बनाना एक लाभकारी करियर है। दो हजार पच्चीस के अंत तक, भारत में अस्सी करोड़ इंटरनेट उपयोगकर्ता होंगे, जिनमें से अधिकांश हिंदी माध्यम पसंद करेंगे।

सोशल मीडिया ने हिंदी को नई ऊर्जा दी है और वैश्विक मंचों तक पहुँचाने का माध्यम बना है। उदाहरणस्वरूप, हिंदी पॉडकास्ट और ब्लॉगिंग से लाखों कमाई हो रही है। भविष्य में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता–आधारित उपकरणों के साथ हिंदी सामग्री निर्माण के विशेषज्ञों की जरूरत पड़ेगी।ई–शिक्षण मंचों पर हिंदी पाठ्यक्रम की मांग बढ़ रही है। नई शिक्षा नीति के तहत, हिंदी माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा, जिससे शिक्षकों और सामग्री विकासकर्ताओं के लिए नौकरियाँ पैदा होंगी। इसके अलावा, सॉफ्टवेयर कंपनियाँ हिंदी इंटरफेस विकसित कर रही हैं, जैसे गूगल अनुवाद का हिंदी संस्करण। इससे सॉफ्टवेयर विकासकर्ता जो हिंदी में कोडिंग समझ सकें, के अवसर बढ़ेंगे। पर्यटन क्षेत्र में हिंदी गाइड और यात्रा ब्लॉगर के रूप में रोजगार बढ़ेगा। विदेशी पर्यटकों के लिए हिंदी–अंग्रेजी मिश्रित यात्रा पैकेज लोकप्रिय हो रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, दो हजार तीस तक भारत में पर्यटन उद्योग दस प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद योगदान देगा, जिसमें हिंदी की भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

शिक्षा हमेशा से हिंदी का मजबूत क्षेत्र रहा है, लेकिन भविष्य में यह और विस्तृत होगा। नई शिक्षा नीति में तीन भाषा सूत्र के तहत हिंदी को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे शिक्षकों की मांग बढ़ेगी। देश भर में हाल ही में जारी विज्ञप्तियों में हिंदी के लिए सैकड़ों पद घोषित हुए हैं। भविष्य में, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी पढ़ाने के अवसर बढ़ेंगे। अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में हिंदी पाठ्यक्रम चल रहे हैं, जहाँ शिक्षकों की वेतन पचास हजार डॉलर प्रति वर्ष तक है। ऑनलाइन मंचों पर हिंदी शिक्षकों के लिए

स्वतंत्र कार्य का बाजार खुल रहा है।

अनुवाद क्षेत्र में हिंदी का महत्व और अधिक होगा। वैश्विक व्यापार में, कंपनियाँ हिंदी–अंग्रेजी अनुवाद की आवश्यकता महसूस कर रही हैं। माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसे दिग्गज कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुवाद उपकरण विकसित कर रहे हैं, लेकिन मानवीय अनुवाद की मांग बनी रहेगी। हिंदी कॉन्टेंट की मांग अंग्रेजी से पाँच गुना तेजी से बढ़ रही है। दो हजार तीस तक, अनुवाद उद्योग का बाजार पचास अरब डॉलर का हो जाएगा, जिसमें हिंदी का बड़ा हिस्सा होगा। स्वतंत्र मंचों जैसे अपवर्क पर हिंदी अनुवादकों को प्रति परियोजना पाँच सौ से दो हजार डॉलर मिलते हैं। इसके अलावा, साहित्यिक अनुवाद से लेखकों को नई पहचान मिलेगी। हिंदी उपन्यासों का अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनुवाद वैश्विक बाजार खोलेगा। मीडिया उद्योग हिंदी के लिए स्वर्णिम अवसर प्रदान करेगा। हिंदी फिल्में, वेब श्रृंखलाएँ और ओवर द टॉप मंचों पर हिंदी सामग्री की मांग तीस प्रतिशत सालाना बढ़ रही है। पटकथा लेखक, संवाद लेखक और निर्माता के पद उपलब्ध होंगे। मनोरंजन में, खेल विकास उद्योग हिंदी समर्थन जोड़ रहा है। मोबाइल खेलों में हिंदी वर्णन से विकासकर्ताओं को नौकरियाँ मिलेंगी।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में, व्यापार प्रक्रिया आउटसोर्सिंग और ग्राहक सेवा में हिंदी एजेंटों की मांग बढ़ेगी। अमेजन और फ्लिपकार्ट जैसे ई–वाणिज्य मंचों पर हिंदी ग्राहक सहायता टीम हैं। भविष्य में, हिंदी विपणन रणनीतिकार ग्रामीण भारत को लक्ष्य करेंगे, जहाँ सत्तर प्रतिशत आबादी हिंदी बोलती है। हिंदी बाजार की भाषा बन गई है, खरीद–बिक्री की भाषा बन गई है, लेकिन अभी पूंजी निर्माण की भाषा नहीं बन पाई है। लेकिन प्रवृत्तियों से पता चलता है कि यह पूंजी निर्माण की भाषा बनेगी। अंतरराष्ट्रीय व्यापार में, हिंदी भारत–रूस, भारत–जापान जैसे संबंधों को मजबूत करेगी। हिंदी जानने वाले राजनयिकों और व्यापार विश्लेषकों की जरूरत पड़ेगी।

हालाँकि हिंदी के प्रसार में चुनौतियाँ भी हैं। अंग्रेजी का वर्चस्व एक बड़ी बाधा है। आज वैश्विक मान्यता है कि अंग्रेजी जानने से रोजगार के साथ–साथ तकनीक व विज्ञान के अनगिनत दरवाजे खुलते हैं। लेकिन हिंदी पट्टी के लोग अन्य भाषाएँ सीखने से हिचकते हैं, जबकि गैर–हिंदी क्षेत्र हिंदी थोपने का विरोध करते हैं। डिजिटल विभाजन के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में हिंदी सामग्री की पहुँच कम है। समाधान के रूप में, हिंदी–अंग्रेजी द्विभाषिक शिक्षा को बढ़ावा देना जरूरी है। सरकार को हिंदी कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरण विकसित करने के लिए निवेश करना चाहिए। युवाओं को कौशल विकास कार्यक्रमों में हिंदी को शामिल करना होगा।

हिंदी न केवल हमारी पहचान है, बल्कि भविष्य में रोजगार के नए रास्ते खोलने वाली शक्ति भी है। डिजिटल, शिक्षा, मीडिया और व्यापार जैसे क्षेत्रों में इसके अवसर असीमित हैं। यदि हम हिंदी को तकनीक के साथ जोड़ें, तो यह करोड़ों युवाओं को सशक्त बनाएगी। हिंदी हमारी राजभाषा है, जो न केवल हमारी संस्कृति का निर्माण करती है, बल्कि उसका पोषण भी करती है। आइए, हम सब मिलकर हिंदी को भविष्य का माध्यम बनाएँ। यह न केवल रोजगार देगी, बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी योगदान देगी। ❐

सोशल मीडिया

सरकार को चिंता है तो बस चालान की

✍ **अभिषेक कुमार मिश्रा**

सरकार को आपके जान की चिंता तभी है जब आपसे आपकी जान की सलामती का फाइन लेना हो, जैसे. ..

हेलमेट लगाइए वरना 1000 का चालान

सीट बेल्ट लगाइए वरना 1000 का चालान

तीन आदमी मत बैठाइए वरना जाने कितना चालान

हाइवे पर भी स्पीड थोड़ी ज्यादा हो जाए तो बिना बताए चालान

नशा मत कीजिए वरना जेल और जुर्माना दोनों (बिहार में तो और बवाल है)

और भी तमाम तरह से देश में जनता के लिए जान बचाने की सुविधा फाइन देकर उपलब्ध है लेकिन पिछले कुछ सालों से लगातार देश में किसी भी उम्र में लोगों की अचानक हार्ट अटैक, कार्डिएक अरेस्ट, ब्रेन हैमरेज

से जान जा रही है इस पर ना सरकार संज्ञान ले रही है ना देश की सर्वोच्च अदालत।

कई सारे लोगों ने बताया कि उनके आस पास भी अचानक होने वाली मौत के मामले हुए हैं, जिनके सीसीटीवी फुटेज हैं वो तो दिख रहा है लेकिन ज्यादातर मामलों का वीडियो तो है नहीं लेकिन मामले तो हो रहे हैं ना बस कुछ सुनवाई, कोई एक्शन नहीं है, जिसे झेलना है वो बस झेले।

''बस इतनी सी कीमत है अपनी जान की

सरकार को चिंता है तो बस चालान की'' ❐

भारत का सेमीकंडक्टर बाजार 100 बिलियन डॉलर से अधिक होने का अनुमान

✍ **सुनील कुमार महला**
युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

2 सितंबर 2025 मंगलवार को दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने पहली स्वदेशी चिप, जो कि देश की पहली 32–बिट माइक्रोप्रोसेसर चिप, जिसे 'विक्रम' नाम दिया गया है है, सौंपी है। गौरतलब है कि विक्रम 32 चिप का निर्माण 32 बिट आर्किटेक्चर पर हुआ है। यह पल भर में आसानी से बड़े से बड़े डाटा का विश्लेषण करने में सक्षम है। ये माइक्रोप्रोसेसर अंतरिक्ष मिशन में इस्तेमाल हो सकेगा। चिप से एयरोस्पेस और उपग्रह मिशन के जटिल आंकड़ों का अध्ययन करने में आसानी होगी। यहां पाठकों को बताता चलूं कि विक्रम–32 चिप पुरानी चिप विक्रम–1601 का ही उन्नत वर्जन है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस चिप का इस्तेमाल वर्ष 2009 में इसरो के प्रक्षेपण वाहनों में इस्तेमाल हुआ था। इसके आंकड़ों का अध्ययन करने के बाद वैज्ञानिकों ने इस चिप में कई स्तर पर सुधार का बाद नई स्वदेशी चिप लॉन्च की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार चिप एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में इस्तेमाल होने वाले एडीए लैंग्वेज की प्रोग्रामिंग को पूरी तरह सपोर्ट करेगी। इसरो द्वारा निर्मित सॉफ्टवेयर टूल, कंपाइलर, एसेंबलर, लिंकर और सिमुलेटर के साथ आसानी से काम करेगी। सी– प्रोग्रामिंग लैंग्वेज के लिए इसे तैयार किया जा रहा। इसका निर्माण भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के चंडीगढ़ स्थित सेमीकंडक्टर लैबोरेटरी (एससीएल) में हुआ है। इसका इस्तेमाल विपरीत हालात में रॉकेट लॉन्चिंग में होगा। बताया जा रहा है कि

अभी इस चिप का इस्तेमाल उपग्रह और रॉकेट के क्षेत्र में होगा, लेकिन भविष्य में इसका इस्तेमाल रक्षा प्रणाली, एयरोस्पेस तकनीक, अत्याधुनिक ऑटोमोटिव सॉल्यूशन और ऊर्जा के क्षेत्र में किया जाएगा। इसको लेकर काम जारी है। तकनीक के क्षेत्र में भी इसका दायरा बढ़ाने की कोशिश होगी। यहां पाठकों को बताता चलूं कि चिप को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि वे किसी भी तापमान में अपना काम सुचारू ढंग से करती रहेगी। चिप –55 डिग्री सेल्सियस के तापमान के साथ 125 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर काम करती रहेगी। चिप हेरमेटिक सील में पैक रहेगी। बहरहाल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेमीकॉन इंडिया–2025 के उद्‌घाटन सत्र को संबोधित करते हुए ये कहा कि आज सेमीकंडक्टर का वैश्विक बाजार 60 हजार करोड़ डॉलर का है, जो अगले कुछ वर्षों में एक लाख करोड़ डॉलर को पार कर पाएगा और इसी साल स्वदेशी वाणिज्यिक चिप बनकर बाजार में आ जाएगी। सच तो यह है कि हमारे देश का यह कदम आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक बड़ा, महत्वपूर्ण व गौरवमयी कदम है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस चिप के बारे में यह बात कही है कि 'भारत की सबसे छोटी चिप दुनिया में सबसे बड़े बदलाव का कारण बनेगी।' पाठकों को बताता चलूं कि प्रधानमंत्री ने मंगलवार को यशोभूमि कन्वेंशन सेंटर में सेमीकॉन इंडिया–2025 के उद्‌घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि श्इस क्षेत्र में हमारी यात्रा देरी से शुरू हुई, लेकिन अब कोई ताकत हमें रोक नहीं सकती। भारत बैकएंड से निकलकर पूर्ण रूप से सेमीकंडक्टर राष्ट्र बनने की ओर बढ़ रहा है। बहरहाल, कहना गलत नहीं होगा कि आज हम 21 वीं सदी में सांस ले रहे हैं और आज की दुनिया की शक्ति छोटी सी चिप में सिमट गई है, क्यों कि आज एआइ (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) का जमाना है और कमोबेश हर छोटे–बड़े काम छोटी चिप पर आधारित हो गये हैं। सच तो यह है कि सेमीकंडक्टर आज के डिजिटल युग की रीढ़ हैं। स्मार्टफोन, इलेक्ट्रिक वाहन, रक्षा प्रणाली, सुपर कंप्यूटर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, यानी एआई सब इन्हीं चिप पर आधारित हैं। वास्तव में,भारत का सेमीकंडक्टर प्रयास केवल चिप्स बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि एक संपूर्ण इकोसिस्टम का निर्माण करना है, जो वैश्विक उद्योग को नए सिरे से परिभाषित करेगा। पाठकों को बताता चलूं कि विक्रम प्रोसेसर भारत की सेमिकंडक्टर महत्वाकांक्षा की बस शुरुआत है। आज दुनिया के करीब 20% चिप डिजाइन इंजीनियर भारत में हैं। यही कारण है कि भारत पहले से ही ग्लोबल चिप डिजाइन का अहम हिस्सा

है। क्वालकॉम, इंटेल, एनविडिया, ब्रॉडकॉम और मीडियाटेक जैसी दिग्गज कंपनियों ने बेंगलुरु, हैदराबाद और नोएडा में अपने बड़े आर एंड डी और डिजाइन सेंटर स्थापित किए हैं, जिससे भारत की भूमिका वैश्विक चिप इकोसिस्टम में और मजबूत हुई है। गौरतलब है कि भारत सरकार ने 2021 में सेमिकान इंडिया प्रोग्राम की शुरुआत की थी, जिसके तहत लगभग 76,000 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि वैश्विक निर्माताओं को आकर्षित करने के लिए दी जा रही है। विक्रम प्रोसेसर का लॉन्च और नए सेमिकंडक्टर प्रोजेक्ट्स यह दर्शाते हैं, कि भारत न केवल तकनीकी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है, बल्कि आने वाले समय में वैश्विक चिप निर्माण और डिजाइन का केंद्र बनने की दिशा में भी अग्रसर है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत अब डिजाइन और सॉफ्टवेयर में ही नहीं, बल्कि सेमीकंडक्टर निर्माण की वैश्विक दौड़ में भी नेतृत्व करने को तैयार है। पाठकों को बताता चलूं कि आज दुनिया की हर बड़ी चिप कंपनी, इंटेल से लेकर क्वालकॉम तक के डिजाइन केंद्र बेंगलुरु, हैदराबाद और नोएडा में मौजूद हैं। भारत अब नेक्स्ट जेनरेशन की चिप डिजाइन कर रहा है।अब तक इनका निर्माण ताइवान, दक्षिण कोरिया या अमेरिका में होता था। गौरतलब है कि दुनिया में चिप (सेमीकंडक्टर) निर्माण एक बेहद प्रतिस्पर्धी और रणनीतिक क्षेत्र है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि दुनिया की सबसे बड़ी चिप निर्माता कंपनी टीएस एमसी (ताइवान सेमिकंडक्टर मैनुफैक्चरिंग कंपनी) है। गौरतलब है कि वैश्विक उन्नत चिप्स (5एनएम, 3एनएम) का बड़ा हिस्सा ताइवान ही बनाता है तथा इसे 'चिप पावरहाउस' कहा जाता है। दक्षिणी कोरिया में सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स और एसके हाइनिक्स जैसी दिग्गज कंपनियाँ हैं। पाठकों को बताता चलूं कि मेमोरी चिप्स (डीआरएएम, एनएएनडी) में कोरिया दुनिया का लीडर है। वहीं पर अमेरिका डिजाइन और रिसर्च में सबसे आगे है। इंटेल, नवीदिया, क्वालकोम, एएमडी तथा माइक्रोन जैसी कंपनियाँ अमेरिकी हैं। उत्पादन का बड़ा हिस्सा एशिया (टीएसएमसी, सैमसंग) पर निर्भर है, लेकिन अमेरिका अब 'चिप्स एक्ट' के तहत खुद उत्पादन बढ़ा रहा है। वहीं चीन एसएमआईसी (सेमिकंडक्टर मैनुफैक्चरिंग इंटरनेशनल कार्पोरेशन चीन की सबसे बड़ी कंपनी है। अभी उन्नत चिप निर्माण (5nm से नीचे) में पीछे है, लेकिन तेजी से निवेश कर रहा है। हालांकि, चीन का लक्ष्य है कि वह साल 2030 तक आत्मनिर्भर बन जाए। वहीं पर यदि हम जापान की बात करें तो जापान चिप निर्माण उपकरण और सामग्री (जैसे फोटोरेजिस्ट, सिलिकॉन वेफर, प्रिसिशन मशीनरी) का बड़ा सप्लायर है। सोनी और टोक्यो इलेक्ट्रॉन जैसी कंपनियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। नीदरलैंड की एएसएमएल दुनिया की इकलौती कंपनी है जो ईयूवी लीथोग्राफी मशीन बनाती है, जो आधुनिक चिप बनाने की रीढ़ है। जर्मनी और फ्रांस भी चिप डिजाइन और उत्पादन में निवेश कर रहे हैं। बहरहाल, कहना गलत नहीं होगा कि भारत में, विक्रम–32 के निर्माण ने चिप कहानी को अब पूरी तरह से बदलकर रख दिया है। पाठकों को बताता चलूं कि भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा इलेक्ट्रॉनिक्स उपभोक्ता बाजार है। आज मोबाइल, लैपटॉप, कार, रक्षा उपकरण, एआइ और फाइव जी–सभी को चिप्स चाहिए। भारत अब तक खासतौर से चीन, ताइवान और कोरिया से चिप आयात करता आया है,जो भारत की आर्थिक व सामरिक सुरक्षा के लिए चुनौती थी। अब भारत सेमिकान इंडिया प्रोग्राम के तहत ₹76,000 करोड़ पैकेज के साथ चिप डिजाइन, फैब (फेब्रिकेशन), असेंबली और टेस्टिंग के लिए प्रोत्साहन दे रहा है। इंडिया सेमिकंडक्टर मिशन के तहत अब चिप निर्माण को रणनीतिक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए स्थापित है तथा 'मेक इन इंडिया' तथा 'आत्मनिर्भर भारत' के तहत चिप्स को प्राथमिकता दी जा रही है,जो काबिले–तारीफ है। चिप क्षेत्र में भारत अब बड़े निवेश और साझेदारियाँ कर रहा है। वेदांता–फोक्सकोन जेवी गुजरात में बड़ा सेमीकंडक्टर प्लांट लगाने की योजना है। इतना ही नहीं, माइक्रोन(यूएसए) के तहत गुजरात में चिप पैकेजिंग और टेस्टिंग यूनिट पर काम शुरू हो चुका है। इतना ही नहीं, टाटा इलैक्ट्रोनिक्स सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग और पैकेजिंग में प्रवेश कर चुका है। और तो और कर्नाटक में एक फैब यूनिट आईएस एमसी(इंडियाज सेमिकंडक्टर मैनुफैक्चरिंग कंपनी) प्रस्तावित है। कहना गलत नहीं होगा कि चिप निर्माण के लिए भारत में युवा टैलेंट की कोई कमी नहीं है। हमारे यहां लाखों इंजीनियर मौजूद हैं, जो एआइ, वीएलएसआई और एमबेडेड सिस्टम्स में दक्ष हैं। हमारे यहां चिप मांग का विशाल बाजार भी उपलब्ध है और 2030 तक भारत का सेमीकंडक्टर बाजार 100 बिलियन डॉलर से अधिक होने का अनुमान है, लेकिन इन सब के बावजूद चिप निर्माण क्षेत्र में चुनौतियां भी कुछ कम नहीं हैं। मसलन,सेमीकंडक्टर फैब लगाना बेहद महंगा और तकनीकी रूप से जटिल (एक फैब की लागत +10–15 बिलियन तक) है। इतना ही नहीं, उच्च–गुणवत्ता वाली पानी और बिजली की जरूरत भी है। इसके अलावा, सप्लाई चेन और विशेषज्ञता की कमी भी कुछ प्रमुख चुनौतियों में से एक है।

❐

डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण

✍ **संदीप सृजन**
संपादक– शाश्वत सृजन
ए–99 वी.ड़ी मार्केट, उज्जैन 456006

डिजिटल युग ने शिक्षा के परिदृश्य को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। पहले शिक्षक कक्षा में ब्लैकबोर्ड और पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान प्रदान करते थे, किन्तु आज वे डिजिटल उपकरणों, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और ऑनलाइन मंचों के साथ मिलकर छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं। आज जब हम डिजिटल परिवर्तन के शिखर पर हैं, शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान वितरक से बदलकर मार्गदर्शक, परामर्शदाता और नवप्रवर्तक की हो गई है। आज शिक्षक डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर शिक्षा को अधिक समावेशी, व्यक्तिगत और प्रभावशाली बना रहे हैं।

डिजिटल युग की शुरुआत इंटरनेट और कंप्यूटर के प्रसार से हुई, परन्तु 2020 की कोविड–19 महामारी ने इसे तीव्र गति प्रदान की। ऑनलाइन कक्षाएँ, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म्स ने शिक्षा को घर–घर तक पहुँचाया। युनेस्को की सन् 2025 की रिपोर्ट के अनुसार, विश्व भर में 80% से अधिक छात्र डिजिटल उपकरणों से जुड़े हैं। इस परिवर्तन में शिक्षक की भूमिका केंद्रीय है। वे अब केवल लेक्चर देने वाले नहीं, अपितु डिजिटल सामग्री निर्माता (कंटेंट क्रिएटर) हैं, जो वीडियो,इंटरएक्टिव क्विज और वर्चुअल रियलिटी के माध्यम से शिक्षा प्रदान करते हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से, शिक्षा हमेशा तकनीकी प्रगति से प्रभावित रही है। प्राचीन काल में गुरुकुल प्रणाली मौखिक थी, मध्ययुग में पुस्तकों का आगमन हुआ और अब डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन शिक्षण ने क्रांति ला दी है। ओईसीडी की हाल की रिपोर्ट में उल्लेख है कि शिक्षकों को डिजिटल शिक्षा के लिए प्रशिक्षित करना आवश्यक है, ताकि वे छात्रों को जोखिमों से बचाते हुए लाभ प्रदान कर सकें।

डिजिटल युग में शिक्षक की प्राथमिक भूमिका मार्गदर्शक की है। वे छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित और निर्देशित करते हैं, न कि केवल सूचना प्रदान करते हैं। आज फ्लिप्ड क्लासरूम में छात्र घर पर वीडियो देखते हैं और कक्षा में विचार–विमर्श करते हैं। शिक्षक यहाँ मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं, जो छात्रों की जिज्ञासा को सही दिशा देते हैं। दूसरी भूमिका परामर्शदाता की है। डिजिटल युग में सूचनाओं की प्रचुरता के बावजूद, छात्रों को सही दिशा की आवश्यकता होती है। शिक्षक व्यक्तिगत शिक्षण पथ तैयार करते हैं, जहाँ एआई के माध्यम से छात्र की कमजोरियों का विश्लेषण होता है और शिक्षक व्यक्तिगत फीडबैक प्रदान करते हैं। तीसरी भूमिका नवप्रवर्तक की है। शिक्षक डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर नवीन शिक्षण विधियाँ विकसित करते हैं। उदाहरण के लिए, वर्चुअल रियलिटी के माध्यम से इतिहास की घटनाओं को जीवंत करना या खेल– आधारित शिक्षण द्वारा गणित सिखाना। एक अध्ययन के अनुसार, डिजिटल मंच शिक्षकों के ज्ञान साझाकरण को बढ़ावा देते हैं, जिससे वे वैश्विक स्तर पर सहयोग कर पाते हैं।

डिजिटल युग में शिक्षकों के

समक्ष कई चुनौतियाँ हैं। सबसे बड़ी चुनौती है डिजिटल डिवाइड। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और उपकरणों की कमी के कारण छात्र पिछड़ जाते हैं। युनेस्को के अनुसार, सन् 2025 में भी विकासशील देशों में 40% शिक्षक डिजिटल उपकरणों से अपरिचित हैं। शिक्षकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता है, किन्तु कई देशों में यह अपर्याप्त है। ओईसीडी की रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि डिजिटल शिक्षा के लिए शिक्षकों को सक्षम बनाने पर ध्यान देना चाहिए। दूसरी चुनौती साइबर सुरक्षा और गोपनीयता की है। ऑनलाइन कक्षाओं में डेटा लीक का खतरा रहता है। शिक्षकों को छात्रों को साइबर धमकी से बचाने की आवश्यकता है। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से साहित्यिक चोरी बढ़ सकती है, जिसके लिए शिक्षकों को मूल्यांकन विधियों में परिवर्तन करना पड़ता है। अनिच्छुक शिक्षकों को प्रौद्योगिकी अपनाने में सहायता की आवश्यकता है।

मानसिक स्वास्थ्य भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। डिजिटल कक्षाएँ शिक्षकों पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं, जैसे 24 घण्टे उपलब्धता। एक अध्ययन के अनुसार, कई शिक्षक कार्यभार के कारण तनावग्रस्त हो रहे हैं। चुनौतियों के बावजूद, डिजिटल युग शिक्षकों के लिए अवसरों से परिपूर्ण है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षकों को नियमित कार्यों, जैसे ग्रेडिंग या लेसन प्लानिंग से मुक्त करती है, जिससे वे रचनात्मकता पर ध्यान दे सकें। कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग (सीओएल) की सन् 2025 की रिपोर्ट में उल्लेख है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षकों को सशक्त बनाती है। उदाहरण के लिए एआई टूल्स छात्रों की प्रगति का अनुसरण करते हैं और शिक्षकों को अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी शिक्षा को गहन बनाते हैं। शिक्षक वर्चुअल टूर्स आयोजित करते हैं, जैसे मंगल ग्रह की सैर या ऐतिहासिक घटनाओं का अनुभव। अमेरिकन एसपीसीसी के अनुसार, डिजिटल युग में शिक्षा का विकास हो रहा है, जहाँ शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं।

व्यक्तिगत शिक्षण एक बड़ा अवसर है। डिजिटल उपकरण छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप सामग्री अनुकूलित करते हैं। शिक्षक डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर छात्रों की सहायता करते हैं। लिंक्डइन के एक लेख में सन् 2025 में एआई—पावर्ड क्लासरूम्स की चर्चा है, जहाँ शिक्षक एआई को सहायक के रूप में उपयोग करते हैं। वैश्विक स्तर पर, नाइजीरिया जैसे देशों में टीआरसीएन डिजिटल पोर्टल शुरू कर शिक्षकों को आधुनिक बना रहा है। भारत में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 डिजिटल शिक्षा पर बल देती है। शिक्षक दिक्षा और स्वयं जैसे मंचों का उपयोग करते हैं। किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी की कमी जैसी चुनौतियाँ हैं। सन् 2025 में, भारतीय शिक्षक कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एकीकृत कर रहे हैं, परन्तु प्रशिक्षण की कमी एक बाधा है।

कुछ समय में शिक्षक की भूमिका और अधिक विकसित होगी। मेटावर्स में आभासी कक्षाएँ (वर्चुअल क्लासरूम्स) होंगी, जहाँ छात्र अवतार के रूप में भाग लेंगे। शिक्षक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ सहयोग करेंगे, किन्तु मानवीय संपर्क का महत्व बना रहेगा। एनसी स्टेट यूनिवर्सिटी की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता युग में शिक्षकों का मानवीय संबंध अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता है। सरकारों को निवेश करना चाहिए, जैसे ग्लोबल पार्टनरशिप फॉर एजुकेशन (जीपीई) जो प्रौद्योगिकी सहायता प्रदान करता है। भविष्य में, शिक्षक सृजन अर्थव्यवस्था (क्रिएटर इकोनॉमी) का हिस्सा बनेंगे, जैसे सेजटूलर्न मंच पर पाठ्यक्रम बनाकर आय अर्जित करेंगे।

डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। वे सृजनकर्ता हैं, जो डिजिटल उपकरणों के माध्यम से शिक्षा को सशक्त बनाते हैं। चुनौतियाँ हैं, परन्तु अवसर अधिक हैं। समाज को शिक्षकों का समर्थन करना चाहिए, ताकि वे छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कर सकें। जैसा कि हायर एजुकेशन रिव्यू में उल्लेखित है, शिक्षक शिक्षण के मार्गदर्शक, सहयोगी और आजीवन शिक्षार्थी हैं। अंततः, डिजिटल युग शिक्षक को एक सुपरहीरो बनाता है, जो प्रौद्योगिकी और मानवता के बीच संतुलन स्थापित करता है।

❐

बाढ़: प्राकृतिक आपदा या मानवजनित त्रासदी?

✍ **सुनील कुमार महला**
युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

इस साल देशभर में बारिश बहुत ज्यादा कहर मचा रही है। जगह–जगह तबाही का आलम है। बारिश जो कभी वरदान कहलाती थी, आज कई राज्यों में कहर बनकर बरस रही है। सच तो यह है कि इस बार मानसून ने अपनी रौद्र लीला से पूरे उत्तर भारत को हिलाकर रख दिया है। देश में बहुत सी नदियां उफान पर हैं,तो बांध खतरे के निशान को छू रहे हैं, और जगह–जगह भूस्खलन व बादल फटने की घटनाएं प्रकृति के रौद्र रूप की भयावह तस्वीर पेश कर रही हैं। मीडिया के हवाले से आई खबरों से पता चलता है कि उत्तर भारत में लगातार भारी बरसात के बाद जम्मू के कटरा स्थित वैष्णोदेवी धाम के मार्ग पर भूस्खलन से अब तक 38 लोगों की मौत हो गई है। बहुत ही दुखद है कि दर्शन की लालसा में निकले श्रद्धालु अचानक आई इस त्रासदी का शिकार हो गए। जानकारी के अनुसार मंदिर दर्शन के लिए जा रहे कई श्रद्धालु अर्धकुंवारी के पास मार्ग पर भूस्खलन व भारी बारिश की चपेट में आ गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार मंदिर मार्ग पर कई जगह पत्थर गिरने से हादसे हुए। सेना के जवान और बचाव दल लगातार राहत कार्यों में जुटे हैं। इधर, भूस्खलन के बाद वैष्णोदेवी की यात्रा भी रोक दी गई। इस घटना पर हमारे देश के प्रधानमंत्री सहित देशभर ने मृतकों के प्रति गहरा शोक व संवेदना व्यक्त की है। यह पहली बार है कि वैष्णो देवी यात्रा में इतनी बड़ी त्रासदी सामने आई है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि जम्मू–कश्मीर में पिछले 24 घंटों में 210 एमएम तथा जम्मू में 380 एमएम बारिश दर्ज की गई है। यहां हुई बारिश ने पिछले कई सालों का रेकॉर्ड तोड़ दिया है। मीडिया में आया है कि जम्मू–पठानकोट तथा जम्मू–श्रीनगर हाइवे को भारी क्षति पहुंची है। तवी, चिनाब नदी सहित अन्य नदियों के उफान व बाढ़ से स्थानीय जनजीवन अस्त–व्यस्त हो गया है। जानकारी के अनुसार सेना ने 10 हजार से ज्यादा लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया है। इधर, रेलवे ने जम्मू मार्ग की 58 ट्रेनों का संचालन निरस्त किया है, वहीं 18 ट्रेनों का रूट बदला गया है। उधर, हिमाचल प्रदेश की नदियां व्यास–सतलुज व रावी में भारी बाढ़ चल रही है। चंडीगढ़–मनाली हाइवे को भारी क्षति होने से कुल्लु व मनाली का सम्पर्क कट गया है। लेह एयरपोर्ट से सभी उड़ानें निरस्त कर दी गई हैं। इतना ही नहीं, पठानकोट पंजाब के माधोपुर हेडवर्क्स के निकट बुधवार 27 अगस्त को सेना के हेलिकॉप्टर ने एक इमारत से 22 सीआरपीएफ जवानों और नागरिकों को निकालकर एक बड़ा हादसा टाल दिया। पंजाब में बाढ़ जैसे हालात हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार पोंग व भाखड़ा–नांगल बांधों से पानी निकासी के बाद भयानक बाढ़ से पठानकोट, गुरदासपुर, होशियारपुर, कपूरथला, फिरोजपुर सहित कई क्षेत्रों में हालात

बिगड़ गए। गुरदासपुर में नवोदय विद्यालय के ग्राउंड फ्लोर पर 5 फीट से ज्यादा पानी भरने से 400 विद्यार्थी व शिक्षक फंस गए। रावी नदी में बाढ़ के कारण करतारपुर कॉरिडोर पर 7 फीट तक पानी भर गया। इसके कारण पाकिस्तान में करतारपुरा गुरुद्वारा साहिब भी डूब गया बताते हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार सभी को निकालते ही इमारत भी बह गई। इसी क्रम में हिमाचल प्रदेश की नदियां भी रौद्र रूप धारण कर चुकी हैं। चम्बा में मणि महेश यात्रा बाधित हुई और करीब 2,000 यात्री जगह—जगह फंसे। पंजाब में बांधों (डैम्स) का पानी खतरे के निशान तक पहुंच गया है और गेट खोलने की नौबत आ चुकी है। छत्तीसगढ़ में हालात बुरे हैं। जानकारी के अनुसार छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में बीते दो दिन बारिश ने तबाही मचा दी। इसे 94 साल बाद बड़ी आपदा बताया जा रहा है। खबरों के अनुसार बीते 24 घंटे में 217 एमएम बारिश दर्ज की गई है तथा सेना ने हेलिकॉप्टर से बाढ़ में फंसे 100 लोगों को रेस्क्यू किया है। एक जानकारी के अनुसार यहां कार के साथ बहे परिवार के चार लोगों की मौत हो गई। इधर, उत्तराखंड और जम्मू—कश्मीर में भी हालात बेकाबू होते जा रहे हैं। सड़कें, पुल और मार्ग बाधित हो रहे हैं। कहना गलत नहीं होगा कि धार्मिक यात्राओं पर यह प्राकृतिक प्रकोप गहरा असर डाल रहा है।

आंकड़े बताते हैं कि उत्तर भारत में 12 साल बाद सबसे ज्यादा बारिश हुई है। विदित हो कि साल 2013 में केदारनाथ में आई विनाशकारी बाढ़ के बाद उत्तर भारत में इस साल सामान्य से 21ः ज्यादा बारिश हुई है। आइएमडी के अनुसार 2021 के बाद इस बार उत्तर भारत के राज्यों में बेहद भारी बरसात हुई है। कहना गलत नहीं होगा कि आज अंधाधुंध विकास के बीच हम प्रकृति से लगातार खिलवाड़ कर रहे हैं और हमें इसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। प्राकृतिक आपदाओं के सामने मनुष्य आज असहाय प्रतीत होता है। निश्चित ही इससे देश की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। हजारों लोगों की आजीविका पर भी व्यापक असर पड़ता है। जन—जीवन अस्त—व्यस्त तो होता ही है। ऐसे में सरकार और संबंधित राज्य प्रशासन की यह जिम्मेदारी बनती है कि यात्रियों की सुरक्षा, मार्गों की मरम्मत, मौसम की पूर्व चेतावनी और आपदा—निवारण व्यवस्था को मजबूत करें।बारिश का यह कहर हमें कहीं न कहीं एक गहरा संदेश देता है। प्रकृति को हल्के में लेना हमारी सबसे बड़ी भूल है। बाढ़ अत्यधिक वर्षा, नदियों के उफान, बांध टूटने या बादल फटने के कारण आती है। इसमें नदियाँ और नाले खतरे के निशान से ऊपर बहने लगते हैं, जिससे गांव—शहर जलमग्न हो जाते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि मनुष्य अपनी सुविधाओं और लालच के लिए लगातार प्रकृति से खिलवाड़ कर रहा है। जंगलों की कटाई, नदियों का दोहन, प्रदूषण, अंधाधुंध शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ दिया है। इसका परिणाम हमें भूकंप, बाढ़, सूखा, भूस्खलन, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन जैसी आपदाओं के रूप में भुगतना पड़ रहा है। अंत में यही कहूंगा कि प्रकृति और विकास का संतुलन बनाए रखना मानव जीवन के लिए आवश्यक है। केवल आर्थिक प्रगति ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि पर्यावरण और पारिस्थितिकी का संरक्षण भी उतना ही जरूरी है। सतत विकास वही है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सोच—समझकर किया जाए। पेड़—पौधों, जल, भूमि और वायु को सुरक्षित रखकर ही आने वाली पीढ़ियों को बेहतर जीवन दिया जा सकता है। हमें यह चाहिए कि हम प्रकृति का सम्मान करें और संसाधनों को नष्ट न करें, अन्यथा प्रकृति हमें कहीं का भी नहीं छोड़ेगी। ❐

नेपाल में सोशल मीडिया पर बैन के बाद हिंसक विरोध प्रदर्शन

पड़ोसी मुल्क नेपाल की राजधानी काठमांडू में 8 सितंबर को सोशल मीडिया प्लेटफार्म के बैन के बाद प्रदर्शन कर रहे युवाओं और पुलिस के बीच झड़पों में कम से कम 17 लोगों की मौत हुई। जबकि पूरे देश में यह संख्या 20 तक पहुँच गई।

नेपाल सरकार ने बीते सप्ताह 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध लगाया था।

इनमें फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और व्हाट्सऐप जैसे चर्चित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म शामिल थे।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध के बाद युवाओं ने प्रदर्शन का आह्वान किया था। विरोध प्रदर्शन में शामिल होने आए बहुत से स्कूल कॉलेज के छात्र छात्राएं यूनिफॉर्म में देखे गएं, क्योंकि वे स्कूल कॉलेज की पढ़ाई खत्म होते ही सीधा यूनिफार्म में ही विरोध करने चले आएं।

नेपाल में बढ़ते भ्रष्ट्राचार की वजह से युवाओं के गुस्से का शिकार बने कई वीवीआईपी।

आक्रोशित युवाओं ने संसद भवन, न्यायपालिका और कई मंत्रियों के घर आग के हवाले कर दिये। नेपाल के कुछ मंत्रियों को घर से घसिट कर आक्रोशित भीड़ ने पीट–पीट कर अधमरा कर दिया। इस डर से कई मंत्रियों ने इस्तिफा तक दे दिया। वहां के युवा अब भ्रष्ट्राचार मुक्त सरकार चाहते हैं। ❐

मौन से संवाद तक-आत्महत्या रोकने की पहल

✍ **सुनील कुमार महला**
युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

हर वर्ष 10 सितंबर को शविश्व आत्महत्या निवारण दिवसश मनाया जाता है। वास्तव में इस दिवस को मनाने के पीछे उद्देश्य आत्महत्या को रोकने (टू प्रिवेंट सुसाइड) के लिए जागरूकता फैलाना है। पाठकों को बताता चलूं कि यह दिवस इंटरनेशनल एसोसिएशन फोर सुसाइड प्रिवेंशन (आईएएसपी) द्वारा 2003 से मनाया जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) इसमें अपना सहयोग देता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य आत्महत्या से होने वाली मौतों को कम करना, मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर खुलकर बात करना, समर्थन, देखभाल और उपचार की पहुँच बढ़ाना तथा आत्महत्या करने वाले लोगों, उनके परिवारों और दोस्तों को सहायता देना है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि 2024 से 2026 तक विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस का त्रिवार्षिक विषय 'आत्महत्या पर कथा को बदलना' है, जो आत्महत्या और मानसिक स्वास्थ्य के बारे में खुली चर्चा का आग्रह करता है, कलंक को समझ और समर्थन के साथ बदलता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इस वर्ष का अंतर्राष्ट्रीय विषयः 'चेंजिंग द नेरेटिव आन सुसाइड' (आत्महत्या पर दृष्टिकोण बदलना) रखी गई है। कहना गलत नहीं होगा कि यह विषय आत्महत्या के बारे में हमारी सोच और संवाद को बदलने की आवश्यकता को उजागर करता है। पाठक जानते हैं कि विश्व में हर वर्ष लाखों लोग आत्महत्या करते हैं। मानसिक तनाव, अवसाद, नशा, आर्थिक समस्याएँ, अकेलापन और सामाजिक दबाव इसके पीछे कुछ प्रमुख कारण हैं। कहना गलत नहीं होगा कि आत्महत्या एक सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है दृ इसे छिपाना नहीं, समझना जरूरी है।

बहरहाल, यदि हम यहां पर भारत में आत्महत्या के प्रमुख आंकड़ों की बात करें

तो भारत में 2022 में कुल 1,70,924 आत्महत्याएँ हुईं, जो 2021 की तुलना में 3.3% अधिक हैं। चिंताजनक बात यह है कि यह आंकड़ा पिछले 56 वर्षों में सबसे अधिक है। आत्महत्या की दर की यदि हम यहां पर बात करें तो साल 2022 में आत्महत्या की दर 12.4 प्रति 1,00,000 जनसंख्या थी। वास्तव में यह बहुत ही चिंताजनक बात है कि 18–30 वर्ष की आयु वर्ग में कुल आत्महत्याओं का 35% हिस्सा है, जबकि 30–45 वर्ष की आयु वर्ग में 32% आत्महत्याएँ हुईं। वहीं दूसरी ओर यदि हम महिलाओं में आत्महत्या की यदि यहां पर बात करें तो महिलाओं में आत्महत्या की दर 80 प्रति 1,00,000 है, जबकि पुरुषों में यह दर 34 प्रति 1,00,000 है। इतना ही नहीं साल, 2022 में 11,290 किसानों और कृषि श्रमिकों ने आत्महत्या की, जो कुल आत्महत्याओं का 6.6% है। बहरहाल, कहना गलत नहीं होगा कि आज के समय में मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ, जैसे कि अवसाद, चिंता, द्वि/रुवी विकार, और स्किजोफ्रेनिया, आत्महत्या के प्रमुख कारण हैं।यह भी एक तथ्य है कि कृषि संकट, जैसे सूखा, फसल विफलता, और कर्ज का बोझ, किसानों में मानसिक तनाव और आत्महत्या के मामलों में वृद्धि का कारण बनते हैं। हाल फिलहाल, आत्महत्या का निवारण एक बहुत ही संवेदनशील और बहुस्तरीय विषय है। आत्महत्या से बचाव केवल व्यक्तिगत प्रयास नहीं, बल्कि परिवार, समाज, स्वास्थ्य तंत्र और नीति निर्माण का साझा दायित्व है। आज जरूरत इस बात की है कि हम विशेष रूप से अपने युवाओं में अवसाद (डिप्रेशन), चिंता (एंग्जायटी), नशे की आदत जैसी समस्याओं की समय रहते पहचान करें। समय पर मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से परामर्श लेना बहुत ही महत्वपूर्ण, जरूरी और आवश्यक है। हमें यह याद रखना चाहिए कि योग, ध्यान, व्यायाम और सकारात्मक सोच से मानसिक संतुलन को बनाए रखा जा सकता है। आज हमारी कमी यह है कि हम दूसरों की भावनाओं की कद्र नहीं करते हैं। होना तो यह चाहिए कि हम किसी भी व्यक्ति की भावनाओं को सुनें, उसका कभी भी मजाक न उड़ाएँ। अकेलेपन, असफलता, तनाव, पारिवारिक झगड़े आदि पर खुलकर बातचीत करें। यदि कोई व्यक्ति तनाव और अवसाद से पीड़ित है तो हमें यह चाहिए कि

हम उस व्यक्ति विशेष को 'तुम अकेले नहीं हो, हम तुम्हारे साथ हैं' जैसा भरोसा दें, ताकि वह जीवन में सहज हो सके और उसे तनाव और अवसाद महसूस न हो। बच्चों, किशोरों और युवाओं के साथ क्वालिटी टाइम बिताया जा सकता है। हमें यह चाहिए कि हम अपने बच्चों के लिए भी पर्याप्त समय निकालें और उन पर पर्याप्त ध्यान दें। बच्चों की दिनचर्या, उनके व्यवहार और मानसिक स्थिति पर ध्यान दिया जाना चाहिए। मोबाइल की लत तनाव और अवसाद का बड़ा कारण हो सकती है। हमें यह चाहिए कि हम बच्चों का स्क्रीन टाइम कम करने का प्रयास करें और उन्हें खेल के मैदानों, नैतिक कहानियों, पुस्तकालयों, हमारी सनातन संस्कृति आदि से जोड़ें।संकट की स्थिति में उन्हें दोषी न ठहराकर उनकी सहायता करें। उन्हें संबल दें।

बच्चों में सकारात्मक सोच विकसित करना बहुत ही जरूरी है। वास्तव में, सकारात्मक सोच वह मानसिक शक्ति है जो हमारे दृष्टिकोण, व्यवहार और जीवन की दिशा बदल देती है। यह सिर्फ सोच बदलने का तरीका नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक शैली है। जब हम सकारात्मक सोच अपनाते हैं, तो कठिनाइयाँ भी अवसर बन जाती हैं। सकारात्मक सोच का फायदा यह है कि यह हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाती है, हमारे तनाव और अवसाद को कम करती है तथा यह हमारी प्रोडेक्टीविटी (उत्पादकता) में इजाफा करती है। वास्तव में,सकारात्मक सोच का जादू कोई असंभव चीज नहीं है। यह रोजमर्रा की आदतों से पैदा होता है। शुरुआत छोटे कदमों से की जा सकती है, फिर धीरे–धीरे हमारी सोच, दृष्टिकोण और जीवन में बदलाव साफ दिखाई देंगे। हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि एक सकारात्मक विचार पूरी दुनिया बदल सकता है और इसकी शुरुआत हम अपने भीतर से कर सकते हैं। इसके अलावा, शराब, ड्रग्स और अन्य लत मानसिक तनाव बढ़ाते हैं। नशा छुड़ाने के लिए पेशेवर सहायता ली जा सकती है। बच्चों में जीवन कौशल का विकास किया जाना चाहिए। इतना ही नहीं,समस्या समाधान की क्षमता विकसित की जानी चाहिए तथा बच्चों का आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाया जाना बहुत जरूरी है। समय प्रबंधन, भावनाओं को संभालने और तनाव कम करने की तकनीकें सीखना भी जरूरी है। हमारी ओर से सामाजिक समर्थन और नीतिगत पहलें की जानी चाहिए। मसलन, क्लब, खेल, सामाजिक समूहों में शामिल होकर सकारात्मक नेटवर्क बनाए जाने चाहिए तथा मदद मांगने में संकोच नहीं करना चाहिए। इसके अलावा मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार और आसान उपलब्धता आवश्यक है।स्कूलों और कार्यस्थलों में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि भारत सरकार ने आत्महत्या की रोकथाम और मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए कई महत्वपूर्ण पहलें की हैं। मसलन,आज हमारे देश में मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम, 2017 लागू है। इस अधिनियम ने आत्महत्या के प्रयास को अपराध की श्रेणी से बाहर किया है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाले व्यक्तियों को सहायता प्राप्त करना आसान हुआ है। गौरतलब है कि मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम, 2017 मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं के अधिकार को सुनिश्चित करने, मानसिक बीमारी वाले व्यक्तियों की गरिमा और उनके अधिकारों की रक्षा करने और भारत के मानसिक स्वास्थ्य कानूनों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के साथ एकीकृत करने के लिए अधिनियमित किया गया था। इस अधिनियम ने 1987 के मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम का स्थान लिया और भारत में मानसिक स्वास्थ्य देखभाल और सेवाओं में कई प्रगतिशील बदलाव पेश किए, जैसे सस्ती और गुणवत्तापूर्ण मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का अधिकार और भारत में आत्महत्या को अपराध की श्रेणी से बाहर करना। इतना ही नहीं, केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास के लिए 24x7 टोल–फ्री हेल्पलाइन सेवा श्किरणश की भी शुरुआत की है। यह हेल्पलाइन चिंता, तनाव, अवसाद और आत्मघाती विचारों से जूझ रहे व्यक्तियों को सहायता प्रदान करती है। यह सेवा 13 भाषाओं में उपलब्ध है और मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा संचालित है, जो उपयोगकर्ताओं को परामर्श, मार्गदर्शन और आवश्यकतानुसार चिकित्सकीय सहायता प्रदान करते हैं। मनोदर्पण पहल भी एक अन्य पहल है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा शुरू की गई यह पहल छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को कोविड–19 महामारी के दौरान और उसके बाद मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण के लिए मनोसामाजिक सहायता प्रदान करती है। इसमें ऑनलाइन परामर्श, वीडियो, पॉडकास्ट और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जानकारी शामिल है, जो मानसिक तनाव और चिंता से निपटने में मदद करती है। इसके अलावा, राष्ट्रीय आत्महत्या रोकथाम रणनीति, 2022

मानसिक स्वास्थ्य देखभाल, जागरूकता, शिक्षा, और आपातकालीन सेवाओं के समन्वय पर केंद्रित है। इस रणनीति का उद्देश्य आत्महत्या की दर को कम करना और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को बढ़ाना है। अंत में यही कहूंगा कि जीवन अनमोल है और हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है। ईश्वर ने हमें जीवन सेवा, प्रेम, करुणा और आत्म–विकास के लिए दिया है।हमें यह जीवन मिला है, इसलिए हमें इसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि हर दिन, हर सांस, एक नया अवसर है। हमें मानसिक स्वास्थ्य (मेंटल हेल्थ) पर खुलकर बात करनी चाहिए, और इस कलंक को समाप्त करना चाहिए और हर उस व्यक्ति का साथ देना चाहिए जो संघर्ष कर रहा हो। विश्व आत्महत्या निवारण दिवस हमें प्रेरित करता है कि हम करुणा, संवाद और सहयोग से जीवन को नई दिशा दें। यही सच्चा संकल्प है– 'जीवन को चुनें, आशा को बढ़ावा दें।' हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि हमारी सोच जितनी उजली होगी, हमारी राह उतनी ही सरल होगी। ❐

अमेरिकी टैरिफ वार से निपटने की भारतीय राह

✍ **अवनीश कुमार गुप्ता**
साहित्यकार, शोधार्थी,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

ट्रम्प प्रशासन की हालिया टैरिफ नीति ने भारत–अमेरिका व्यापार संबंधों को एक बार फिर कठिन मोड़ पर ला खड़ा किया है। 2025 में अमेरिका ने भारत से निर्यात होने वाले कई औद्योगिक और उपभोक्ता उत्पादों पर टैरिफ दरों को दोगुना कर दिया, जिनमें कुछ श्रेणियों पर यह 50 प्रतिशत तक पहुँच गई है। इस निर्णय ने उन सेक्टरों को सबसे अधिक प्रभावित किया है जो पहले से ही कम मार्जिन पर काम कर रहे थे और जहाँ मूल्य–संवेदनशीलता अत्यधिक है। कपड़ा, चमड़ा, आभूषण, समुद्री उत्पाद और कुछ रासायनिक उद्योगों में निर्यातकों को अचानक लागत बढ़ने की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। भारतीय निर्यातकों के लिए यह स्थिति केवल अमेरिकी बाजार में प्रतिस्पर्धात्मकता घटने की नहीं, बल्कि ऑर्डरों के रद्द होने और रोजगार पर सीधा असर डालने की भी है।

यदि व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह कदम नया नहीं है। वर्ष 2019 में ट्रम्प प्रशासन ने भारत को जीएसपी अर्थात जनरलाइज्ड सिस्टम ऑफ प्रेफरेंसेज की सूची से बाहर कर दिया था। उस समय भारत को अमेरिका के बाजार में लगभग 6 अरब डॉलर के निर्यात पर शुल्क–मुक्त या रियायती प्रवेश मिलता था। इसके हटते ही भारतीय निर्यातकों को समान वस्तुओं के लिए वियतनाम, बांग्लादेश और अन्य प्रतिस्पर्धी देशों की तुलना में मूल्य बढ़ाना पड़ा और इसका प्रत्यक्ष प्रभाव ऑर्डरों पर पड़ा। इसके जवाब में भारत ने भी 28 अमेरिकी वस्तुओं पर प्रतिशुल्क लगाया था, जिनमें कैलिफोर्निया के बादाम, सेब और अखरोट प्रमुख थे। व्यापार युद्ध का यह चक्र 2018 में तब शुरू हुआ जब अमेरिका ने वैश्विक स्तर पर इस्पात और एल्यूमिनियम पर टैरिफ लगाए और भारत भी उसका हिस्सा बना।

यह स्पष्ट है कि समस्या केवल टैरिफ लगाने और हटाने तक सीमित नहीं है। भारत की वास्तविक चुनौती संरचनात्मक है। हमारी निर्यात क्षमता का बड़ा हिस्सा अब भी श्रम–गहन उद्योगों और कम मूल्य–वर्धित उत्पादों पर आधारित है। जब कोई बड़ा व्यापारिक साझेदार अचानक शुल्क बढ़ाता है, तो हमारी प्रतिस्पर्धात्मकता घट जाती है क्योंकि हमारी लागत संरचना पहले से ही अपेक्षाकृत ऊँची है। आपूर्ति श्रृंखला में अकार्यक्षमता, उच्च लॉजिस्टिक खर्च, तकनीकी पिछड़ापन और ब्रांडिंग की कमी इस समस्या को और गंभीर बनाती है। इसीलिए समाधान केवल कूटनीतिक विरोध या कानूनी चुनौती तक सीमित नहीं रह सकता। दीर्घकालिक समाधान वही होगा जो घरेलू स्तर पर उत्पादन क्षमता, मूल्य वर्धन और निर्यात विविधीकरण को मजबूती दे।

राष्ट्रीय स्तर पर भारत को तत्काल राहत और दीर्घकालिक पुनर्गठन दोनों पर एक साथ काम करना होगा। सबसे पहले उन उद्योगों को वित्तीय और नीतिगत समर्थन देना आवश्यक है जो सीधे प्रभावित हुए हैं।

यह सहायता निर्यात ऋण में रियायत, उत्पादन आधारित प्रोत्साहन, ऑर्डर रद्द होने की स्थिति में तरलता समर्थन और हेजिंग व बीमा सुविधाओं तक त्वरित पहुँच के रूप में हो सकती है। इससे अल्पकाल में रोजगार और उत्पादन पर पड़ने वाले दबाव को कम किया जा सकेगा। परंतु केवल राहत पैकेज पर्याप्त नहीं होंगे। हमें अपने उद्योगों की उत्पादन पद्धति को नए सिरे से इंजीनियर करना होगा। यदि कपड़ा और चमड़ा उद्योग सिर्फ सस्ती श्रम पर आधारित रहेंगे तो हर टैरिफ झटके से उनकी हालत बिगड़ेगी। इसके विपरीत यदि डिजाइन, ब्रांड और उच्च मूल्य वर्धन पर ध्यान दिया जाए तो अमेरिकी बाजार में भी मूल्य–संवेदनशीलता उतनी बाधा नहीं बनेगी।

लॉजिस्टिक्स और लागत संरचना को सुधारे बिना प्रतिस्पर्धात्मकता हासिल करना कठिन है। भारतीय निर्यातक अक्सर बंदरगाहों पर देरी, उच्च मालभाड़ा और जटिल कस्टम प्रक्रियाओं से जूझते हैं। इन समस्याओं को हल करने के लिए अवसंरचना सुधार और डिजिटल एकीकरण अनिवार्य है। निर्यातक तभी अमेरिकी और यूरोपीय प्रतिस्पर्धियों से मुकाबला कर पाएंगे जब उनकी कुल लागत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संतुलित होगी। साथ ही, भारत को बाजार विविधीकरण की दिशा में भी तेजी से काम करना होगा। अमेरिका पर अत्यधिक निर्भरता जोखिमपूर्ण है। यूरोपीय संघ, मध्य पूर्व, अफ्रीका और एशिया के नए क्षेत्रीय बाजारों में प्रवेश करके हम किसी एक देश की नीतिगत अनिश्चितता से अपने निर्यात को सुरक्षित कर सकते हैं।

कूटनीतिक दृष्टि से भी भारत को संतुलित और बहु–स्तरीय रणनीति अपनानी होगी। अमेरिका के साथ उच्चस्तरीय वार्ता जरूरी है ताकि द्विपक्षीय व्यापार संबंध पूरी तरह से टकराव की ओर न बढ़ें। परंतु यदि अमेरिका लगातार टैरिफ हथियार का प्रयोग करता है तो हमें बहुपक्षीय मंचों जैसे विश्व व्यापार संगठन में कानूनी चुनौती देने से पीछे नहीं हटना चाहिए। सेक्शन 232 जैसे कानूनों का दुरुपयोग अंतरराष्ट्रीय व्यापार नियमों के लिए खतरनाक है। भारत को यूरोपीय संघ, जापान, आसियान देशों और अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर सामूहिक दबाव बनाना होगा ताकि ऐसे कदमों का वैश्विक स्तर पर प्रतिरोध हो सके।

वैश्विक परिदृश्य में ट्रम्प प्रशासन की नीतियाँ केवल भारत के लिए ही नहीं बल्कि संपूर्ण वैश्विक व्यापार व्यवस्था के लिए चुनौतीपूर्ण हैं। यदि बड़े देश लगातार संरक्षणवादी उपाय अपनाते रहे तो मुक्त व्यापार और वैश्वीकरण का जो ढांचा पिछले तीन दशकों में बना है, वह दरकने लगेगा। इसका प्रभाव विशेष रूप से विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ेगा क्योंकि उनकी वृद्धि का बड़ा हिस्सा निर्यात और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर आधारित है। भारत को इस बदलते परिदृश्य में स्वयं को एक विश्वसनीय विनिर्माण केंद्र और आपूर्ति श्रृंखला का स्थायी हब बनाना होगा। इसके लिए 'चीन प्लस वन' रणनीति से आगे बढ़कर 'मल्टीपल हब मॉडल' अपनाना होगा, जिसमें भारत को निवेश, प्रौद्योगिकी और उत्पादन क्षमता में वैश्विक विश्वास हासिल करना होगा।

दीर्घकालिक स्तर पर यह भी ध्यान रखना होगा कि टैरिफ युद्ध केवल व्यापारिक नहीं रहते। वे राजनीतिक और सुरक्षा संबंधों पर भी असर डालते हैं। अमेरिका यदि आर्थिक हथियारों से अपने राजनीतिक हित साधता है तो अन्य देश भी यही रुख अपनाएंगे। इससे वैश्विक संबंधों में अस्थिरता बढ़ेगी। भारत के लिए यह जरूरी है कि वह अपनी बहुध्रुवीय कूटनीतिक नीति को और मजबूत बनाए और ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा सहयोग तथा क्षेत्रीय गठबंधनों में विविधीकरण करे। इससे किसी एक देश के आर्थिक दबाव का असर सीमित किया जा सकेगा।

इन सभी प्रयासों के बीच उपभोक्ताओं और घरेलू अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उच्च टैरिफ से आयात महंगे होते हैं और यदि भारतीय उद्योग उन आयातित इनपुट्स पर निर्भर हैं तो घरेलू कीमतें भी बढ़ेंगी। इसका असर मुद्रास्फीति और उपभोक्ता क्रय शक्ति पर होगा। इसलिए मौद्रिक नीति और राजकोषीय नीतियों को इस पहलू का ध्यान रखना होगा।

टैरिफ युद्ध को केवल संकट के रूप में देखना अधूरा दृष्टिकोण होगा। यह भारत के लिए अवसर भी है। यदि हम इस चुनौती का सामना दूरदर्शी दृष्टि से करें तो अपने उद्योगों को अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बना सकते हैं। अल्पकाल में राहत और मध्यम अवधि में बाजार विविधीकरण के साथ दीर्घकालिक संरचनात्मक सुधार ही वह मार्ग है जो भारत को न केवल ट्रम्प प्रशासन की नीतियों के झटकों से उबार सकता है, बल्कि वैश्विक व्यापार व्यवस्था में स्थायी और मजबूत स्थान दिला सकता है। भारत को आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ते हुए वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का अभिन्न अंग बनना होगा। तभी हम किसी भी टैरिफ युद्ध का सामना मजबूती से कर सकेंगे और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के बदलते परिदृश्य में अपनी स्थिति सुरक्षित कर पाएंगे। ❐

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान (NIOS) में होगी भोजपुरी की पढ़ाई

नोएडा, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान (NIOS) में भोजपुरी की ऑनलाइन पढ़ाई के लिए दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन हुआ। 31 अगस्त, रविवार को एक परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसका मुख्य विषय था 'भोजपुरी की ऑनलाइन पढ़ाई और विश्व की युवा शक्ति को जोड़ने/जगाने का प्रयास' जिसमें बतौर मुख्य अतिथि डॉ. सरिता बुधू ने भोजपुरी के पाठ्यक्रम निर्माण एवं इसके विकास पर एक सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. बुधू ने भोजपुरी को लोक की भाषा बताते हुए इसके प्रसार एवं उपयोग पर बल दिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग कर भोजपुरी को वैश्विक स्तर पर प्रचारित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. बुधू भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस की पूर्व चेयरपर्सन व भोजपुरी आंदोलन की अगुआ हैं।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कवि और भोजपुरी स्कॉलर मनोज भावुक ने कहा कि भोजपुरी की ऑनलाइन पढ़ाई गिरमिटिया देशों के युवाओं को जोड़ने–जगाने के अभियान का ही हिस्सा है। दो वर्षों से मैं डेटाबेस तैयार कर रहा हूँ। आज मॉरीशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद–टोबैगो आदि गिरमिटिया देशों व अमेरिका–यूरोप–गल्फ कंट्रीज, नेपाल आदि देशों के भोजपुरी योद्धा कलमकार, कलाकार व एक्टिविस्ट की लंबी फेहरिस्त है मेरे पास ... लगभग 200 टीम लीडर। भोजपुरी जंक्शन के महिला कथा अंक में 14 देशों के 100 महिलाओं की 100 भोजपुरी कहानियां छापी मैंने। भोजपुरी जंक्शन का गिरमिटिया विशेषांक, अचीवर्स जंक्शन का भारत–मॉरीशस महोत्सव, आगरा और दिल्ली में आयोजित भारत–मॉरीशस मैत्री कवि–सम्मेलन आदि ...इसी दिशा में प्रयास के तहत आयोजित था, तो छुपे रुस्तम की खोज–बीन लगातार जारी है। हाल ही में एमजीआई मॉरीशस में भोजपुरी का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू हुआ है। उन्हें भी भारत से भोजपुरी कंटेंट देने का प्रयास है। कैलिफोर्निया व बर्लिन में भोजपुरी पर शोध जारी है। यूनेस्को में गीत–गवाई हेरिटेज के रूप में शामिल है। छठ के लिए प्रयास जारी है। सफलता के लिए सामूहिक प्रयास व जागरण जरूरी है। इसीलिए है यह ऑनलाइन पढ़ाई ताकि दुनिया का भोजपुरी के सामर्थ्य से साक्षात्कार हो। बतौर संयोजक मैं दुनिया के भोजपुरी देशों को जोड़ने का प्रयास और एनआईओएस में भोजपुरी कोर्स के निर्माण के लिए मटेरियल उपलब्ध कराने में सहयोग करता रहूंगा।

कार्यक्रम का शुभारंभ निदेशक (शैक्षिक) डॉ. राजीव कुमार सिंह के स्वागत भाषण से हुआ, जिसमें उन्होंने सभी अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि बहुत जल्द हम भोजपुरी की ऑनलाइन पढ़ाई शुरू करेगें। विद्यार्थी सहायता सेवाएं निदेशक एस विजय कुमार तथा व्यावसायिक शिक्षा निदेशक टी एन गिरी ने भी भाषा के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। संस्थान के सचिव शकील अहमद ने कहा कि भाषा अंतर्मन के सबसे करीब होती है और यह हमारे मन के उद्‌गार को अभिव्यक्त करने का माध्यम है। वहीं सुनीता पहुजा ने मॉरिशस में अपने अनुभव साझा करते हुए भोजपुरी को चेतना की भाषा बताया और अपनी एक कविता से श्रोताओं को भावविभोर किया। कार्यक्रम का समापन मनोज भावुक के गजल–पाठ से हुआ।

दूसरे दिन भोजपुरी की पढ़ाई के लिए सिलेबस क्या हो, पूरे विश्व के युवाओं को भोजपुरी से कैसे जोड़ा जाए और आज की टेक्नोलॉजी व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करके विषय को रुचिकर कैसे बनाया जाय, इस पर बातचीत की गई और नये वर्ष में कोर्स शुरू करने की योजना बनी।

कार्यक्रम का संचालन उपनिदेशक (शैक्षिक) डॉ. बालकृष्ण राय ने किया। ❒

बरगद का पेड़

✍ नीतू सुदीप्ति 'नित्या'
राजा बाजार, कटेया रोड,
बिहिया–802152
जिला–भोजपुर (बिहार)
n.sudipti@gmail.com

बरगद का पेड़ जिसने
दो सौ वर्षों तक छाया दी
आज अचानक गिर गया।
जड़ से उखड़ धूल धूसरित हो गया
बरगद जिसने राहगीरों को छाया दी
चिड़ियों का बसेरा बना
दो सौ सालों तक अचल अडिग
मजबूती से खड़ा रहा
आज अचानक गिर गया।
पुरुषों से ज्यादा महिलाओं को दुख हुआ
वट सावित्री पूजन कर
उस बरगद पेड़ को पूज
सुहागिनों ने पति की लंबी आयु का वर मांगा
और कुँवारियों ने मन चाहा वर प्राप्त किया
बड़ पेड़ कैसे गिरा, कब गिरा ?
सभी के दिल ने आह भरी
वह पेड़ नहीं था सभी के
सुख–दुख का साथी था
बरगद की छाँव में डोली और अर्थी भी उठी
उसके पत्ते–पत्ते ने खुशी–मातम के हर धुन सुने
बरगद पेड़ खड़ा था पिता की छत्रछाया की तरह
बरगद पेड़ खड़ा था माँ की आँचल तानकर
हाय बरगद पेड़ गिर गया
जड़ से उखड़ धूल धूसरित हो गया।

❒

जीएसटी दरों में बदलाव : आत्मनिर्भर, सशक्त और न्यायपूर्ण व्यवस्था की ओर कदम

✍ सुनील कुमार महला
युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

सरकार द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से जीएसटी में बड़े बदलाव कर आम जनता को राहत देने की घोषणा की गई थी और अब इस क्रम में केंद्र सरकार को जीएसटी में 12 प्रतिशत और 28 प्रतिशत स्लैब को हटाने की राज्यों के मंत्रियों की समिति (जीओएम) से भी मंजूरी मिल गई है। कहना गलत नहीं होगा कि जीएसटी दरों में कटौती और जनहित में लिए गए फैसले निश्चित रूप से देश की अर्थव्यवस्था और आम जनता के लिए राहत लेकर आए हैं। सच तो यह है कि जब सरकार जनता की जरूरतों और महँगाई के दबाव को ध्यान में रखकर कर दरों को कम करती है, तो इसका सीधा लाभ उपभोक्ताओं के साथ–साथ व्यापारियों को भी मिलता है। बहरहाल, यह बात बहुत कम लोग ही जानते होंगे कि फ्रांस को विश्व में जीएसटी का जनक कहा जाता है, क्योंकि वस्तु और सेवा कर (जीएसटी) लागू करने वाला फ्रांस दुनिया का पहला देश था। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि 2016 में संसद के दोनों सदनों द्वारा संवैधानिक (122वाँ संशोधन) विधेयक पारित होने के बाद वस्तु और सेवा कर व्यवस्था लागू हुई थी। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) भारत में वस्तुओं और सेवाओं के निर्माण, बिक्री और उपभोग पर अप्रत्यक्ष कर है,जो हमारे देश में 1 जुलाई 2017 से लागू हुआ था। गौरतलब है कि वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) को 101वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2016 के माध्यम से पेश किया गया था तथा यह देश के सबसे बड़े अप्रत्यक्ष कर सुधारों में से एक है। इसे 'वन नेशन वन टैक्स' के

नारे के साथ पेश किया गया था। यह भी उल्लेखनीय है कि जीएसटी में उत्पाद शुल्क, मूल्यवर्द्धित कर (वैट), सेवा कर, विलासिता कर आदि जैसे अप्रत्यक्ष करों को सम्मिलित किया गया है। दरअसल, जीएसटी कर के व्यापक प्रभाव या कर के भार को कम करता है , जो अंतिम उपभोक्ता पर भारित होता है। जीएसटी का महत्व या फायदा यह है कि इससे एक साझा राष्ट्रीय बाजार का निर्माण होता है। विदेशी निवेश और 'मेक इन इंडिया' अभियान को बढ़ावा मिलता है। केंद्र और राज्यों तथा केंद्रशासित राज्यों के बीच कानूनों, प्रक्रियाओं और कर की दरों में सामंजस्य स्थापित होता है। टैक्स चोरी हतोत्साहित होती है। टैक्स सिस्टम को निश्चितता मिलती है तथा भ्रष्टाचार में भी कमी आती है। इससे निर्यात और विनिर्माण गतिविधि को बढ़ावा मिलता है, अधिक रोजगार पैदा होते हैं और इस प्रकार लाभकारी रोजगार के साथ सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होती है ,जिससे वास्तविक आर्थिक विकास होता है। बहरहाल, पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) लागू करने वाला भारत का पहला राज्य असम था, जिसने 12 अगस्त 2016 को जीएसटी बिल को मंजूरी दी थी। यह विधेयक सर्वसम्मति से असम विधानसभा में पारित किया गया था, जिससे असम जीएसटी को अपनाने वाला पहला राज्य बन गया। हाल फिलहाल, कहना गलत नहीं होगा कि जब किसी देश में जीएसटी दरें अधिक होती हैं, तो इसके कई नकारात्मक असर दिखाई देते हैं। मसलन, महंगाई बढ़ती है। ऊँची दरों से वस्तुएँ और सेवाएँ महँगी हो जाती हैं, जिससे उपभोक्ताओं को ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। जब चीजें महँगी होती हैं तो लोग उनकी खरीद कम कर देते हैं और इसका असर व्यापार और उद्योग पर पड़ता है। छोटे कारोबारियों पर दबाव बढ़ता है। दरअसल, ऊँचे टैक्स के कारण उत्पादन लागत बढ़ती है। छोटे और मझोले व्यापारी प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं पाते। जीएसटी अधिक होने से काला

बाजारी और टैक्स चोरी की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। अधिक दरें अक्सर लोगों को टैक्स से बचने के लिए अवैध रास्ते अपनाने पर मजबूर करती हैं। हालांकि, जीएसटी में वृद्धि सरकार के लिए सकारात्मक पहलू है। मसलन, जीएसटी दरों में वृद्धि से राजस्व में वृद्धि होती है। ऊँची दरों से सरकार को ज्यादा टैक्स मिलता है, जिसका इस्तेमाल विकास और कल्याणकारी योजनाओं में किया जा सकता है। इतना ही नहीं,महँगी वस्तुओं की खपत पर नियंत्रण होता है। विलासिता की वस्तुओं (लग्जरी गुड्स) पर ऊँचे जीएसटी से उनकी खपत कम होती है, जिससे समाज में संतुलन बना रहता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि जीएसटी दरों के अधिक होने से उपभोक्ता महँगाई का बोझ झेलते हैं, व्यापार पर असर पड़ता है, लेकिन सरकार को अधिक राजस्व प्राप्त होता है। बहरहाल, जीएसटी दरों में कटौती का सरकार का यह फैसला महँगाई नियंत्रण, व्यापार सुगमता और उपभोग वृद्धि की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा सकता है। इससे जहाँ आम नागरिकों को रोजमर्रा की वस्तुएँ सस्ती मिलेंगी, वहीं व्यापारिक जगत में मांग भी बढ़ेगी। कर संरचना सरल होने से छोटे व्यापारियों और मध्यमवर्गीय परिवारों को राहत पहुँचेगी। इससे न केवल लोगों की जेब पर बोझ कम होगा, बल्कि अर्थव्यवस्था में भी नई गति आएगी। सरकार के इस निर्णय से अब लगभग 90 फीसदी वस्तुएं सस्ती हो जायेंगी। हालांकि, विलासिता की वस्तुओं पर 40 फीसदी कर (महंगी कारों जैसे अल्ट्रा लग्जरी (विलासिता) उत्पादों पर 40 फीसदी के अतिरिक्त भी कर) होगा, लेकिन जीएसटी दरों में बदलाव से मध्य वर्ग, किसानों और एमएसएमई (सुक्ष्म ,लघु और मध्यम उद्यम) को निश्चित ही बड़ी राहत मिलेगी। अच्छी बात है कि राज्यों के मंत्रियों के समूह (जीओएम) ने जीएसटी के सिर्फ दो स्लैब पांच और 18 फीसदी रखने के केंद्र के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। अब मामले को जीएसटी परिषद की अगली बैठक में रखा जाएगा, जो इस पर अंतिम फैसला करेगी। पाठकों को बताता चलूं कि जीएसटी बदलाव के बाद जिन 99 फीसदी वस्तुओं पर पहले 12 फीसदी कर लगता था, वे सभी अब 5 फीसदी वाले स्लैब में आ जाएंगी। इसी तरह, 28 फीसदी स्लैब वाली 90 फीसदी वस्तुएं 10 फीसदी सस्ती हो जाएंगी। जीएसटी के दो स्लैब 5 व 18 फीसदी होने से न सिर्फ रोजमर्रा एवं अन्य जरूरी वस्तुओं की कीमतें घटेंगी, बल्कि मांग और खपत को बढ़ावा मिलेगा। हालांकि, राजस्व नुकसान व भरपाई को लेकर भी चिंताएं जताई गई हैं।इस संदर्भ में यह भी कहा गया है कि राज्यों के राजस्व की सुरक्षा तय करते हुए दरें तर्कसंगत बनानी चाहिए, अन्यथा गरीब, मध्य वर्ग और बुनियादी परियोजनाओं के साथ कल्याणकारी योजनाओं को नुकसान होगा।

बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि जीएसटी दरों में कमी के चलते नमकीन, टूथपेस्ट, साबुन, दवाएं आदि सस्ती होंगी। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन पर टैक्स 12 फीसदी से घटाकर 5 फीसदी होगा। दरअसल, 12 फीसदी जीएसटी वाली 99 फीसदी वस्तुओं के पांच फीसदी के दायरे में आने से सूखे मेवे, ब्रांडेड नमकीन, टूथ पाउडर, टूथपेस्ट, साबुन, हेयर ऑयल, सामान्य एंटीबायोटिक्स, दर्द निवारक दवाएं, प्रोसेस्ड फूड, स्नैक्स, फ्रोजन सब्जियां, कंडेंस्ड दूध, कुछ मोबाइल, कंप्यूटर, सिलाई मशीन, प्रेशर कुकर, गीजर जैसी चीजें सस्ती हो जाएंगी। अच्छी बात है कि इलेक्ट्रिक आयरन, वैक्यूम क्लीनर, 1,000 रुपये से अधिक के रेडीमेड कपड़े, 500 से 1,000 रुपये तक वाले जूते, वैक्सीन, एचआईवीध्टीबी डायग्नोस्टिक किट, साइकिल, बर्तन पर भी टैक्स कम लगेगा तथा ज्योमेट्री बॉक्स, नक्शे, ग्लोब, ग्लेज्ड टाइल्स, प्री–फैब्रिकेटेड बिल्डिंग, वेंडिंग मशीन, पब्लिक ट्रांसपोर्ट वाहन, कृषि मशीनरी, सोलर वॉटर हीटर जैसे उत्पादों भी पर भी 5% टैक्स हो जाएगा। सीमेंट, ब्यूटी प्रोडक्ट, चॉकलेट, रेडी–मिक्स कंक्रीट, टीवी, फ्रिज, वॉशिंग मशीन, एसी, डिशवॉशर, निजी विमान, प्रोटीन कन्संट्रेट, चीनी सिरप, कॉफी कन्संट्रेट, प्लास्टिक प्रोडक्ट, रबर टायर, एल्युमिनियम फॉयल, टेम्पर्ड ग्लास, प्रिंटर, रेजर, मैनिक्योर किट आदि पर 28% से घटकर 18% टैक्स लगेगा। हालांकि,भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने रिपोर्ट में यह बात कही है कि, जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाने से 1.98 लाख करोड़ रुपये की खपत को बढ़ावा मिलेगा। हालांकि, इससे सरकार को हर वित्त वर्ष में 85,000 करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान हो सकता है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि अभी जीएसटी में चार स्लैब 5 फीसदी, 12 फीसदी, 18 फीसदी और 28 फीसदी हैं। खाद्य पदार्थों पर या तो शून्य या पांच फीसदी जीएसटी लगता है, जबकि विलासिता व अहितकर वस्तुओं पर 28 फीसदी कर लगता है। बहरहाल, यही कहूंगा कि जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) में दर कटौती और सरलता से जुड़ा फैसला देशवासियों के लिए राहत भरा है।सच तो यह है कि यह निर्णय भारत की आर्थिक मजबूती और जन–कल्याणकारी दृष्टिकोण दोनों का प्रतीक है। दूसरे शब्दों में हम यह बात कह सकते हैं कि यह पहल भारत को आर्थिक रूप से और अधिक आत्मनिर्भर, सशक्त और न्यायपूर्ण व्यवस्था की ओर अग्रसर करेगी। ❒

भाग्योदय का समय कैसे पता करें ?

✍ उमेश उपाध्याय
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ
संपर्क: 9709378488

प्रायः यह प्रश्न लोगों द्वारा पूछा जाता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा ? इसलिए आज हम भाग्योदय काल के बारे में वर्णन कर रहे हैं। कुंडली के नवम भाव से भाग्य और धर्म कर्म के संबंध में विचार किया जाता है। भाग्येश के बलवान होने से जातक भाग्यशाली होता है। ज्योतिष के अनुसार भाग्योदय के संभावित समय का निर्णय कुंडली के पूर्ण विश्लेषण के उपरांत ही बताया जा सकता है। सामान्य रूप से लग्न और नवम भाव से एवं उनके स्वामी ग्रह के अनुसार भाग्योदय का संभावित समय तय किया जा सकता है।

भाग्य अधिपति के केंद्र में रहने से प्रथम ही अवस्था में भाग्य की उन्नति होती है और त्रिकोणगत अथवा उच्च राशिगत रहने से मध्य अवस्था में भाग्य की उन्नति होती है।

यदि लग्न शुभ राशि का हो और उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक बाल्यकाल से ही सुखी हो जाता है परंतु लग्न में कोई पाप ग्रह नहीं होना चाहिए। पुनः यदि लग्नेश शुभ राशिगत हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक 16 वर्ष के बाद ही सुखी हो जाता है। उपर्युक्त के अतिरिक्त यदि भाग्य का अधिपति जिस राशि में रहता है उस राशि के स्वामी को भाग्यकर्ता कहते हैं। उदाहरण स्वरूप मान लिया जाए किसी व्यक्ति का भाग्येश यानी नवम भाव का स्वामी मंगल हो और वह कर्क राशि में अवस्थित हो। कर्क राशि का स्वामी चंद्रमा होने के कारण इनका भाग्यकर्ता चंद्रमा हुए। इसलिए इनका भाग्य उदय 24 वर्ष की उम्र के बाद होना चाहिए। इसी तरह से सूर्य यदि भाग्यकर्ता हों तो इनका भाग्योदय 22 वर्ष के उपरांत होगा। मंगल के भाग्यकर्ता होने से भाग्योदय 28 वर्ष के उपरांत होना चाहिए। इसी तरह से बुध के भाग्य कर्ता होने पर 32 वर्ष के उपरांत भाग्योदय होगा । बृहस्पति के भाग्य कर्ता होने पर 16 वर्ष के उपरांत भाग्योदय होगा, शुक्र के भाग्यकर्ता होने पर 25 वर्ष के उपरांत एवं शनि के भाग्यकर्ता होने पर 36 वर्ष के उपरांत ही पूर्ण भाग्योन्नति होगी।

सप्तमेश यानी सप्तम भाव का स्वामी या शुक्र लग्न कुंडली के तीसरे छठ्ठे, सातवें,दसवें, ग्यारहवें भाव में हों तो भाग्योदय प्रायः विवाह के उपरांत ही होता है। इसके अतिरिक्त भाग्योदय का समय महादशा अंतर्दशा एवं प्रत्यंतर दशा पर भी निर्भर करता है। यदि शुभ ग्रह की दशा अंतर्दशा चलती है तो उस समय भी भाग्य उदय की संभावना होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि भाग्योदय के संभावित समय का निर्धारण करते समय सभी बिंदुओं पर ध्यान रखा जाता है। ❐

पंजाब बाढ़ पीड़ितों की कैसे लौटेगी पटरी पर जिन्दगी

✍ विजय गर्ग
शैक्षिक स्तंभकार, मलोट, पंजाब

पंजाब इस समय भीषण बाढ़ की त्रासदी झेल रहा है, जहां गांव जलमग्न हो गए हैं, घर बर्बाद हो गए हैं और खेतों में फसल की जगह बालू भर गई है। यह संकट केवल पानी उतरने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि भविष्य में समस्याएं और गहराएंगी।

इस समय खेती और पशुधन से संपन्न पंजाब में नदियों–नालों में आये उफान के कारण तीन लाख एकड़ से ज्यादा फसली जमीन को नुकसान हुआ है। सबसे ज्यादा असर धान, मक्का, सब्जियों और अन्य खरीफ फसलों पर हुआ है। सीमा से लगे गुरदासपुर, पठानकोट, होशियारपुर, जालंधर, फाजिल्का, कपूरथला व आसपास के गांवों में घर, सड़क और दुकानें पानी में डूब गई हैं। अब तक करीब 2.56 लाख से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं।

बाढ़ प्रभावित पंजाब में भारी तबाही के चलते बड़ी मात्रा में राहत सामग्री की आवश्यकता है। भोजन की व्यवस्था हो रही है, लेकिन साफ पेयजल की भारी कमी है क्योंकि वाटर ट्रीटमेंट प्लांट बंद हैं और गंदा पानी पीने से हैजा फैलने का खतरा है। रोज लाखों बोतल पानी, बिना बिजली वाले फिल्टर, बड़े आरओ, इन्वर्टर, बैटरी, मोमबत्तियां, माचिस और छोटे जनरेटर की तत्काल जरूरत है क्योंकि बिजली बहाल होने में लंबा समय लगेगा। साथ ही महामारी रोकने के लिए फिनाइल, क्लोरीन पाउडर, मच्छर मारने की दवाइयों व क्रीम की भी तुरंत आवश्यकता है।

बारिश थमने के बाद सबसे बड़ी चुनौती होगी बाढ़ग्रस्त इलाकों से पानी, कीचड़, मलबा और मरे जानवरों का निस्तारण करना। इसके लिए बड़े पंप, जेसीबी, डंपर, ईंधन, सफाई उपकरण व सुरक्षात्मक सामान की तत्काल जरूरत है। सरकारी तंत्र के पास इतनी मशीनरी तुरंत उपलब्ध नहीं होती, इसलिए समाज के लोगों को चाहिए कि वे ऐसे उपकरण राज्य सरकार को भेंट करें, ताकि पुनर्वास कार्य तेजी और प्रभावी ढंग से हो सके।

राहत कार्यों में बड़ी व्यवस्थाओं के साथ–साथ पीड़ित आम लोगों की व्यक्तिगत जरूरतों की अनदेखी नहीं होनी चाहिए। मधुमेह, ब्लडप्रेशर, थायराइड जैसे रोगियों को नियमित दवाएं चाहिए, जो बाढ़ में नष्ट हो चुकी हैं। मानसिक तनाव और सीमित राहत सुविधाओं से अव्यवस्थित लोग बढ़ रहे हैं। ऐसे में दवाइयां, पेयजल, डेटॉल, फिनाइल, क्लोरिन टैबलेट्स, संक्रमण व बुखार की दवाएं, ग्लूकोज, सेलाइन जैसी चीजें तत्काल आवश्यक हैं। पुराने कपड़े या अनाज जैसी चीजें फिलहाल उपयोगी नहीं होंगी।

संपन्न लोगों को आगे बढ़कर पुनर्निर्माण में योगदान देना होगाकृजैसे दूरदराज के गांवों के लिए सीमेंट, लोहा जैसी निर्माण सामग्री भेजना। करीब ढाई लाख लोग पूरी तरह बेघर हो गए हैं, बाजार–वाहन तबाह हो चुके हैं। ऐसे में बीमा दावों का त्वरित और सही निपटारा बड़ी राहत हो सकता है। लेकिन राज्य मशीनरी खुद संभलने में व्यस्त है, इसलिए शिक्षित स्वयंसेवकों की जरूरत है जो नुकसान का सही आकलन कर, बीमा कंपनियों पर भुगतान के लिए दबाव बना सकें और सरकार की योजनाओं का लाभ प्रभावितों तक पहुंचा सकें।

बाढ़ के बाद जीवन को फिर से पटरी पर लाने में सबसे बड़ी बाधा होगी, सरकारी राहत पाने की प्रक्रिया, क्योंकि पैसा उन्हीं के खातों में आएगा जिनके पास आधार कार्ड है। जिनका सब कुछ बाढ़ में बह गया, उनके पास पहचान पत्र भी नहीं बचे। ऐसे में राहत की रकम देर से मिलना व्यर्थ होगा। इस स्थिति में बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों की जरूरत है, जो दूर शहरों में बैठकर प्रभावितों के आधार जैसे दस्तावेज ऑनलाइन निकालकर उन तक पहुंचा सकें, ताकि समय पर उन्हें मदद मिल सके।

हालात कुछ सुधरने पर शिक्षा की जरूरत सामने आएगी, लेकिन तब तक दो लाख से अधिक बच्चों के स्कूल, बस्ते, किताबें सब कुछ बाढ़ में बह चुके होंगे। ऐसे में यदि हर घर से त्योहारों के तोहफों के रूप में एक–एक बच्चे के लिए बस्ता, किताबें, स्टेशनरी, टिफिन बॉक्स और पानी की बोतल भेजी जाए तो पंजाब के भविष्य को संवारने में मदद मिलेगी। पाठ्यपुस्तकों की पुनः छपाई, फर्नीचर व ब्लैकबोर्ड की व्यवस्था, और बच्चों के पोषण के लिए बिस्किट व सूखे मेवे जैसे सुरक्षित खाद्य पदार्थों की भी तत्काल आवश्यकता है। इसके लिए स्थानीय स्तर पर संस्थागत और व्यक्तिगत प्रयास जरूरी हैं।

यदि आवश्यकतानुसार मदद न मिले तो यह समय व संसाधन का नुकसान ही है। आज तक इस बात पर कोई दिशा–निर्देश बनाए ही नहीं गए कि आपदा की स्थिति में किस तरह की तात्कालिक तथा दीर्घकालिक सहयोग की आवश्यकता होती है। ऐसे संकट के समय में एक सच्चा नागरिक वही है, जो अपने संकटग्रस्त देशवासियों के साथ खड़ा होता है। ❒

लोकतंत्र की चुनौती-राजनीति और मर्यादा

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

भारतीय राजनीति हमेशा से वाद–विवाद और मतभेद का केंद्र रहा है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में बहस होना स्वाभाविक है क्योंकि यही संवाद लोकतंत्र की आत्मा है। लेकिन जब यह संवाद मर्यादाओं को पार कर जाए और शालीनता को छोड़कर कटुता, व्यक्तिगत आक्षेप तथा अमर्यादित शब्दावली का रूप ले ले, तब यह केवल चुनावी लाभ–हानि का विषय नहीं रह जाता, बल्कि राष्ट्र के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने–बाने पर गहरा प्रहार करता है।

भारत की राजनीति का इतिहास बताता है कि भाषा और आचरण के स्तर पर उच्च आदर्श स्थापित किए गए थे। महात्मा गांधी सत्य, अहिंसा और शालीनता की भाषा बोलते थे। पंडित नेहरू के भाषणों में मतभेद तो स्पष्ट होता था, किंतु व्यक्तिगत कटाक्ष नहीं। अटल बिहारी वाजपेयी अपने राजनीतिक विपक्ष को सम्मानजनक संबोधन देते हुए अपनी बात रखते थे। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि राजनीति का अर्थ केवल सत्ता की प्राप्ति नहीं, बल्कि समाज को सभ्य और सुसंस्कृत दिशा देना भी है।

वर्तमान समय में राजनीतिक विमर्श जिस स्तर पर जा रहा है, वह चिंताजनक है। राहुल गांधी का आचरण और वक्तव्य, वोटर अधिकार यात्रा के दौरान उनके शब्दों में, जिस प्रकार की भाषा और व्यंग्य झलक रहा है, वह प्रधानमंत्री पद के दावेदार के लिए, शोभनीय नहीं कहा जा सकता है। आलोचना करना अधिकार है, लेकिन भाषा की सीमा लोकतंत्र की प्रतिष्ठा तय करती है। राजद की राजनीति, यह कोई नई बात नहीं है कि राजद और उसके नेताओं की भाषा कई बार मर्यादा से परे रही है। जातिगत समीकरणों पर आधारित कटाक्ष, विपक्षी दलों के लिए अपमानजनक संबोधन इस दल की राजनीतिक धरोहर मानी जाती रही है।

अन्य दलों का व्यवहार, केवल कांग्रेस या राजद ही नहीं, बल्कि समय–समय पर सभी दलों के नेता भाषाई मर्यादाओं को तोड़ते रहे हैं।

भारत आज विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। आर्थिक प्रगति, सांस्कृतिक विविधता और राजनीतिक स्थिरता विश्व को प्रभावित कर रही है। लेकिन जब अंतरराष्ट्रीय मंच पर राजनेताओं का असंयमित वक्तव्य सामने आता है, तो यह छवि धूमिल होती है। विदेशी मीडिया इन भाषाई हमलों को 'भारतीय लोकतंत्र की कमजोरी' के रूप में प्रस्तुत करता है। यह संदेश जाता है कि भारत की राजनीति अब विचारों की नहीं, बल्कि अपमान और कटाक्ष का खेल बन गई है।

भारत की मूल संस्कृति संवाद, सहिष्णुता और सम्मान की रही है। शास्त्र कहते हैं "वाक् संयम ही मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण है।" फिर भी राजनीति में यही वाणी संयम आज गायब होता जा रहा है। इससे यह प्रश्न उठता है कि क्या राजनीति हमारी संस्कृति के विपरीत दिशा में खड़ी हो गई है ?

मर्यादाहीन राजनीति का सबसे बड़ा नुकसान लोकतंत्र को होता है। मतदाता का मोहभंग तब होता है जब नेता गाली–गलौज और व्यक्तिगत हमले करते हैं, तब आम मतदाता राजनीति को एक गंदा खेल समझने लगता है। युवा पीढ़ी पर बुरा असर पड़ने लगता है, जब राजनीति को करियर के रूप में देखने वाले युवाओं के सामने गलत उदाहरण स्थापित होता है। संसदीय गरिमा का ह्रास तब होने लगता है जब संसद और विधानसभा में बहस विचारों की बजाय आरोप– प्रत्यारोप का मंच बन जाता है।

आज के नेता जानते हैं कि विवादास्पद बयान ज्यादा सुर्खियां बटोरता है। ट्विटर और फेसबुक पर त्वरित प्रतिक्रिया के लिए असंयमित भाषा का प्रयोग बढ़ा है। गाली–गलौज और जातिगत व्यंग्य से भीड़ में तात्कालिक तालियां मिल जाती हैं। नए नेताओं को वैचारिक और नैतिक शिक्षा देने वाली संस्थाएं समाप्त हो गई हैं।

चुनाव आयोग को यह अधिकार मिलना चाहिए कि वह चुनावी भाषणों में अपमानजनक भाषा प्रयोग करनेवाले नेताओं पर तुरंत कार्रवाई करे। पार्टियां अपने घोषणापत्र में राजनीतिक शुचिता और भाषा की मर्यादा पर बल दें। मतदाता को यह तय करना होगा कि वह केवल उसी नेता को वोट देगा जो शालीन और संस्कारी भाषा का प्रयोग करे। मीडिया को भी उत्तेजक और असंयमित वक्तव्यों को सनसनी बनाकर प्रस्तुत करने से बचना चाहिए।

लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने का माध्यम नहीं है। यह उस सभ्यता और संस्कृति की आत्मा है जो भारत को विश्वगुरु बनाती है। अगर राजनीति की भाषा पतित हो जाएगी, तो लोकतंत्र की आत्मा भी क्षतिग्रस्त होगी।

आज जब भारत विश्व पटल पर अपनी ताकत साबित कर रहा है, तब नेताओं की भाषा और आचरण को भी उसी स्तर का होना चाहिए। व्यक्तिगत कटाक्ष, असंयमित भाषा और मर्यादाओं का उल्लंघन केवल राजनीति को खोखला नहीं बनाता है, बल्कि पूरे राष्ट्र की छवि को भी धूमिल करता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हर राजनीतिक दल भाषा की मर्यादा तय करें। जनता ऐसे नेताओं को नकारे और मीडिया जिम्मेदारी से व्यवहार करे। ❒

दिल, दिमाग और विचारों की पहेली साइकोसोमेटिक

✍ **डॉ. कुमकुम वेदसेन**
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई
संपर्क: 8355897893
ईमेल : k.vedasen@gmail.com

छोटे से परिवर्तन से ही अपने शरीर से बहुत सी छोटी–छोटी बीमारियों का खुद निदान किया जा सकता है। मस्त रहो स्वस्थ रहो, विचारों में लचीलापन रखो, वातावरण के अनुसार अपने आप को बदलने की कोशिश करते रहो द्य आज मैं एक ऐसे शब्द का इस्तेमाल कर रही हूं जो बहुत सारी बीमारियों में डॉक्टर यह कहकर रोगियों को समझा देते हैं कि यह तो साइकोसोमेटिक है।

यह साइको सोमेटिक होता क्या है ? जब लक्षण शारीरिक हो और कारण मानसिक हो और लगातार उससे आप पीड़ित रहें तो वह साइकोसोमेटिक कहलाता है। आप जितने भी तरह का टेस्ट होता है सभी करवा लेते हैं और सब कुछ नॉर्मल निकलता है फिर भी तबियत गड़बड़ ही लगती है तो ऐसे में डॉक्टर के द्वारा यह सलाह दी जाती है कि यह बिल्कुल साइकोसोमेटिक है। बहुत सारे ऐसे व्यक्तित्व हैं जो इस प्रकार की परेशानियों में उलझे हुए हैं। जो चीज उन्हें पसंद नहीं है, जहां वह जाना नहीं चाहते हैं वैसी जगह जाने के पहले किसी न किसी प्रकार से उनकी तबियत गड़बड़ हो जाती है। कभी खांसी हो जाती है, कभी सर्दी हो जाती है तो कभी बुखार हो जाता है और वह तब तक चलता रहता है जब तक कि वह समय नहीं गुजर जाता है। ऐसी ही बीमारियां साइकोसोमेटिक कहलाती हैं। बार–बार सर्दी होना, बार–बार बुखार होना तो कहीं ना कहीं हमारी मानसिक सोच इन बीमारियों को प्रभावित करती रहती है। एक प्रकार का साइकोसोमेटिक डिफेंस मेकैनिज्म है जो व्यक्तित्व को संतुलित बनाए रखने में अपना योगदान देता रहता है।

अगर विचारों में हम परिवर्तन कर लें या परिवर्तित विचारों को स्वीकार लें और उसके अनुसार अपने व्यवहार में परिवर्तन कर लें तो निश्चित रूप से कुछ ऐसी छोटी–मोटी बीमारियां अपने आप स्वतः सुलझने लगती हैं दवा की आवश्यकता भी नहीं पड़ती है।

मनुष्य की सोच में बहुत बड़ी ताकत होती है, सोच के अनुसार यदि अपने व्यवहार में परिवर्तन कर ले तो जिंदगी को जीना बहुत आसान हो जाता है। समस्याएं तो हर इंसान के जीवन में प्रतिपल प्रतिक्षण आती रहती हैं। हर समस्याओं के सुलझने के दो तरीके होते हैं, एक तरीका निषेधात्मक होता है और दूसरा तरीका सकारात्मक होता है। अगर आप हमेशा निषेधात्मक की ओर आकर्षित होते रहेंगे तो वह समस्या सुलझेगी नहीं समस्या हमेशा समस्या ही बनी रहेगी लेकिन अगर इस समस्याओं को सुलझाने में सकारात्मक विचारों का प्रयोग करेंगे तो सुलझने के रास्ते अपने आप मिलते जाएंगे।

एक पति पत्नी आर्थिक तंगी से गुजर रहे थें, इसका मुख्य कारण यह था कि पति की तबीयत भयंकर रूप से गड़बड़ा गई थी और पत्नी लाचार थी,

घर को छोड़ नहीं सकती थी, पति को छोड़ नहीं सकती थी। वैसी स्थिति में उसने अपने विचारों में परिवर्तन किया और घर से ही छोटे–छोटे धंधे करना शुरू किया शुरू में तो बहुत सारी उलझने आयीं लेकिन धीरे–धीरे अपने आप रास्ता मिलते चला गया और अपनी मंजिल को पाने में वह सफल साबित हो गई। जब आर्थिक तंगी उनकी कम होती दिखी तो स्वाभाविक तौर पर खुद जो बहुत बीमार कहलाते थें वह स्वस्थ लगने लगें। दवा तो एक ही चल ही रही थी लेकिन आत्मविश्वास और अपनी सोच में परिवर्तन कर खुद को भी मानसिक रूप से स्वस्थ बनाया और घर के वातावरण को भी स्वस्थ बना दिया। कहीं ना कहीं यहां पर पति की बीमारी ने पत्नी को भी अस्वस्थ कर दिया था जिसके कारण वह स्वयं में कमजोरी महसूस करने लगी थी द्य सर्दी, खांसी बुखार से पीड़ित रहती थी। कौन किसकी सेवा करे इसी में उलझी रहती थी पर यह नया व्यवसाय उनके लिए एक इंसान बनकर खड़ा हो गया जिसने उनकी समस्याओं को सुलझाकर एक नया रास्ता दिखाया और वह अपने आप में एक दवा बन गया जिससे कि घर में स्वस्थ माहौल बनता चला गया।

परिस्थितियों से उत्पन्न ऐसी बीमारियों को साइकोसोमेटिक कहते हैं। विचारों का परिवर्तन कर आगे बढ़ने की हिम्मत, हौसला रखते हुए खुद में परिवर्तन करना ही साइकोसोमेटिक से रक्षा करना है। इसी तरह का दूसरा उदाहरण मैं आप सभी को दे रही हूं। प्रायः विद्यार्थी लोगों को परीक्षा के पहले नर्वस ब्रेकडाउन हो जाता है, डर लगने लगता है क्या जाने अच्छा रिजल्ट कर पाएंगे या नहीं कर पाएंगे जिसके कारण ठीक परीक्षा के पहले या तो पेट में दर्द होगा या सर में दर्द होगा या बुखार हो

जाएगा या सर्दी खांसी हो जाएगी। वैसे समय में खुद भी अपने आप को कमजोर महसूस करता है विद्यार्थी और माता–पिता से सहानुभूति मिलने के कारण भी आत्मविश्वास मजबूत नहीं होता है बल्कि और कमजोर होता चला जाता है। लेकिन जैसे ही परीक्षा हॉल में उपस्थित हो जाते हैं और परीक्षा देना शुरू करने लगते हैं तो उनकी समस्याएं सब दूर होने लगती हैं, तो ऐसे विद्यार्थियों को जो शारीरिक तौर पर बीमार पड़ते हैं इसका मुख्य कारण मानसिक होता है। तनाव बहुत होते हैं और तनाव को स्वीकार करने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पाते हैं तो भागने की प्रवृत्ति मन में आ जाती है, लेकिन जब समस्या का सामना करने की हिम्मत कर लेते हैं, अपने आप बीमारियां स्वतः कम हो जाती हैं तो ऐसी बीमारियों को हम साइकोसोमेटिक कहते हैं।

सुझाव के तौर पर मैं यह कहना चाहूंगी कि अपनी हिम्मत अपने हौसलों और अपने आत्मविश्वास को मजबूत रखें, विचारों में परिवर्तन करने की ताकत रखें। हर समस्याओं को चुनौती के आधार पर स्वीकार करते जाएं और सामना करने का हौसला रखें तो बहुत हद तक आपकी शारीरिक बीमारियां अपने आप ठीक होती चली जाएँगी।

समस्या को समस्या के तौर पर देखेंगे तो उलझने बढ़ेंगी, समस्या का कारण खोजेंगे तो बहुत सारे कारण दिखेंगे। जब भी समस्या आपके सामने आए तो समस्या पर कम विचार किया जाए समाधान पर ज्यादा विचार किया जाए तो उलझन–तनाव कम होंगे और रास्ता सकारात्मक की ओर अपने आप खुलते चले जाएंगे।

एक और इसी तरह की चर्चा मैं आप लोग के सामने कर रही हूं एक महिला व्हीलचेयर पर चल रही है, वह अपने आप को इतना कमजोर महसूस करती है कि वह खड़ी नहीं हो सकती है, अचानक एक पुरुष आकर उसकी साड़ी का पल्लू खींच के साड़ी खोल देता है और वह खड़ी होकर के अपनी साड़ी पहन अपनी इज्जत बचा लेती है और दौड़ पड़ती है। यहाँ एक मनोवैज्ञानिक चिकित्सा किया गया था क्योंकि समझ में लोगों को आ रहा था कि इस महिला को किसी भी प्रकार की शारीरिक गड़बड़ी नहीं है पर मानसिक तौर पर वह यह समझ रही है कि हमारे पैर कमजोर हो गए हैं, हम खुद नहीं चल सकते तो उसका इस प्रकार से जब चिकित्सा किया गया तो वह स्वतः अपने आप ठीक हो गई। उसका आत्मविश्वास बढ़ गया और उसे खुद बहुत खुशियां मिलने लगी। हर घर में कुछ न कुछ इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं इसलिए कुछ घटनाओं को हम लोग सुधार सकते हैं। खान–पान में परिवर्तन कर, रहन–सहन में परिवर्तन कर, अपनी सोच में परिवर्तन कर बहुत सारे साइकोसोमेटिक बीमारियों से खुद को बचा सकते हैं। धन्यवाद मिलते हैं अब अगले अंक में...

❒

न्यूट्रिला राइस

✍ **किरण उपाध्याय**
रेसिपी एक्सपर्ट

इस बार हम सब्जियों के स्टॉक का उपयोग करके न्यूट्रिला राइस बनाएंगे। यह बहुत ही स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक व्यंजन है।

सामग्रियां:– सोया बड़ी आधा कटोरी पानी में उबला हुआ, एक कटोरी चावल भिगोया हुआ, गाजर एक, शिमला मिर्च आधा, टमाटर एक, कुछ धनियां पत्ती और पुदीने की पत्तियां, अदरक का पेस्ट एक चम्मच, नमक, हल्दी पाउडर, बड़ी इलायची एक, दालचीनी एक टुकड़ा, छोटी इलायची दो , लॉन्ग दो, जीरा एक चम्मच, तेज पत्ता एक, घी दो बड़े चम्मच, ड्राई फ्रूट्स, कश्मीरी मिर्च एक चम्मच, काली मिर्च पाउडर आधा चम्मच, कसूरी मेथी एक चम्मच, दही मेरीनेशन के लिए।

सब्जियों के स्टॉक के लिए:– एक टमाटर ,आधा गाजर, एक टुकड़ा गोभी, परवल दो या जो भी सब्जियां आपके पास उपलब्ध हो।

बनाने की विधि:– कुकर में डेढ़ कटोरी पानी लेंगे (हमने एक कटोरी चावल लिया है, इसलिए हम डेढ़ कटोरी पानी लेंगे) और कुकर में सभी सब्जियों को काटकर (गोभी, परवल, टमाटर ,गाजर, धनियां पत्ती, एक टुकड़ा चुकंदर, एक हरी मिर्च, आप चाहें तो और भी सब्जियां ले सकते हैं) नमक डालकर कुकर में 3 से 4 सिटी लगवा लेंगे।

सोया बड़ी को अच्छी तरह से निचोड़ कर पानी निकाल लेंगे। एक कटोरी में एक बड़ा चम्मच ताजा दही लेंगे उसमें नमक स्वाद अनुसार लाल मिर्च पाउडर एक चौथाई चम्मच, गरम मसाला पाउडर एक चौथाई चम्मच, काली मिर्च पाउडर एक चौथाई चम्मच,अदरक का पेस्ट आधा चम्मच, बारीक कटी हुई धनियां पत्ती एक चम्मच, को मिला लेंगे।अब हम इसमें सोया बड़ियों को अच्छी तरह से मिला लेंगे। हम कढ़ाई गर्म करेंगे, एक चम्मच घी डालेंगे, अब जीरा, हरी मिर्च 2 से 3, दालचीनी, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, लौंग, तेज पत्ता डालेंगे। जब सभी मसाले चटक जाएं तो ड्राई फ्रूट्स को काटकर डाल देंगे। हल्का भुनने के बाद उसमें बारीक कटा हुआ गाजर डालकर हल्का भुनेंगे, शिमला मिर्च ,चुकंदर अदरक का पेस्ट एक चम्मच, टमाटर बारीक कटा हुआ ,नमक स्वाद अनुसार डालकर सब्जियों को हल्का भून लेंगे। अब सभी मसाले करीब आधा–आधा चम्मच डालेंगे, और मसालों को 1 मिनट तक भूनने के बाद उसमें सोया बड़ी डालकर करीब 2 से 3 मिनट भून लेंगे। अब एक बड़ा चम्मच घी डालेंगे और अंत में चावल को डालकर 1 से 2 मिनट भून लेंगे। अब कुकर में हमने जो सब्जियां उबाली थी, उनको हम निकाल लेंगे और उसी पानी में चावल को डालकर एक सिटी लगवा लेंगे। मैंने एक कटोरी चावल के लिए डेढ़ कटोरी पानी लिया था, आप अपने अनुसार पानी ले सकते हैं। कुकर खोलने के बाद हम इसमें एक चम्मच घी और मिला लेंगे।और चावल को बड़े चम्मच से उलट– पलट कर मिला लेंगे।

उबली हुई सब्जियों का हम रायता बना लेंगे। सभी सब्जियों को हम हल्का क्रश कर लेंगे। अब हम उसमें आवश्यकता अनुसार ताजा दही, हरी मिर्च बारीक कटा हुआ, आधा चम्मच भुना जीरा पाउडर, नमक स्वाद अनुसार, काला नमक एक चौथाई चम्मच, चाट मसाला एक चुटकी, लाल मिर्च पाउडर एक चौथाई डालकर अच्छी तरह से मिला लेंगे। हमारा रायता बनकर तैयार है हम न्यूट्रिला राइस और उसके साथ रायता का आनंद लेंगे। मैंने न्यूट्रिला राइस बिना प्याज लहसुन का बनाया है, आप चाहें तो प्याज लहसुन डालकर भी बना सकते हैं। या आप कच्चे चावल की जगह बचे हुए चावलों का भी उपयोग कर सकते हैं। ❒

अब तक नहीं छपी किताबें

✍ बद्री प्रसाद वर्मा अनजान
गल्ला मंडी, गोलाबाजार–273408,
गोरखपुर, उ.प्र.

पांच दशक से लिखता आ रहा
अबतक नहीं छपी किताबें।
बहुत प्रकाशकों से कह डाला
मगर बनी न बातें।

छपने को तो रोज मेरी
पत्र पत्रिकाओं में रचना खूब छपती है।
मगर किताबे छपवाने की
सोच बनी रहती है।

देकर रुपया मैं तो
किताब नहीं छपवा सकता।
पैसे अगर पास होते तो
इतनी नहीं सिफारिश करता।

मैं लिखकर रचनाएं
रोज भेजता रहता हूं।
मैं तो बस पत्र पत्रिकाओं में
छपकर खुश रहता हूं।

आज नहीं तो कल
कोई प्रकाशक हमपर तरस खाएगा।
उसकी मदद से मेरी कोई
पुस्तक छप जाएगी।

आज पुस्तकों पर ही
पुरस्कार सबको है मिलता
मैं बदकिस्मत वाला हूं
बस पुस्तक छपने का ख्वाब देखता।

❒

भीषण बाढ़ विभीषिका

✍ संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर–452011 (मध्य प्रदेश)

लाखों परिवार अपने ही घरों में कैद,
भीषण बाढ़ विभीषिका झेलते खेद।
जीवन श्अस्तित्वश की लड़ाई में दिखा,
देश के अन्नदाता की है यह भूमिका।

इस घड़ी में जरूरी सभी हो एकजुट,
त्राहि–त्राहि करते रहें दम रहा है घुट।
आमजन अपने स्तर पे सहयोग करें,
सरकारी मशीनरी इसका ध्यान धरे।

समाजसेवी राहत कार्य में जुट चुके,
बॉलीवुडी मददगार हाथ खुल सकें।
सहयोग मानवीय संवेदनाएँ प्रतीक,
जन–जन आंसू पोंछे जवाब सटीक।

(संदर्भ–पंजाब में भीषण बाढ़ विभीषिका)

❒

मेरी मिर्जापुरी लाठी

इस पुरानी छानी के गिर जाने से, बरसात होने से दिक्कत तो हुई थी। छानी में लगी लकड़ियों में मेरी मिर्जापुरी लाठी दिखाई दे गई थी। मेरी मिर्जापुरी लाठी का आधा – आधा भाग था। वह क्यों टूट गई थी? यह मेरी स्मृति पटल में बीती यादें ताजा होती चली गईं थीं।

जवानी के ओ बीते दिन जब मनोरंजन के लिए रेडियो या टाकीज में चलचित्र देखने के शिवाय शरीर बनाने के लिए कसरत करना, खेतों में मेहनत करना, या अपनी किसी रिश्तेदार को चिट्ठी लिखकर उसके जवाब का इंतजार करना होता था। शादी विवाह के समय में रिश्तेदारी में जाकर मर्यादा के अंदर रहकर निश्छल प्रेम करना भी एक मनोरंजक घटना होती थी।

शरीर को स्वस्थ, ब्रह्मचर्य रखकर अधिक आकर्षक बनाने की होड़ लगती थी। उस समय मोबाइल का कोई अता–पता नहीं था। हां लैंडलाइन टेलीफोन अधिकारियों के आफिस में दिखाई दे जाते थे। तब प्रेम पैसे की लालच नहीं, गरीबी में भी दिल के अंदर की आवाज हुआ करता था।

मेले में जाना पैदल चलने के साथ – साथ अपनी लाठी साथ में रखना, किस्से – कहानियों की किताबें खरीदना, डाक द्वारा वी पी से उपन्यास, दिल्ली प्रेस की सरिता, चंपक, सुमन सौरभ, हिंदुस्तान टाइम्स हाऊस की बाल भारती, कादम्बिनी आदि पुस्तकें मंगाना,

✍ डॉ. सतीश 'बब्बा'
ग्राम+पोस्ट–कोबरा, जिला–चित्रकूट,
उत्तर–प्रदेश, पिनकोड – 210208

मासिक पत्रिकाओं के सदस्य बनना हमारे मनोरंजन का एक हिस्सा हुआ करता था।

पढ़ाई में प्राइमरी के बाद नजदीक में स्कूल नहीं थे। दस किलोमीटर से भी ज्यादा पैदल चलकर पढ़ने जाते थे। कालेज में भी अब्बल रहने की चाहत रखते थे।

पढ़ाई पूरी करके खेती – किसानी में लग जाना ही परंपरा थी। मेरी भी शादी सोलह साल की उम्र में हो गई थी। इधर पढ़ कर अपनी खेती किसानी में लग गया था। बच्चे हो गए थे। माता पिता का साया सिर से उठ गया था।

कुछ लोगों को मेरा सुख पसंद नहीं था। मैं लिखने के लिए कलम चलाने लगा था। मनमुताबिक पत्नी, बच्चे पढ़ रहे थे, बढ़िया खेती पक रही थी। जीवन चल रहा था। हां उस समय जिसके पास बंदूक का लाइसेंस था वह, कुछ चोरी की भी लेकर शान से चलते थे। बहुत से लोग मजबूत अच्छी लाठी रखते थे जो आत्मरक्षा हेतु बहुत अच्छी साबित होती

थी।

मुझे भी लाठी लेना जरूरी था। लाठी कुछ लोग जंगल से लाते थे, कुछ लोग पास के जंगली गांव से लेकर आते थे। मेरे जीजू मिर्जापुर से दो लाठियां लेकर आए थे। एक लाठी मुझे भा गई थी। बहुत मोटी तो नहीं थी मगर वजनी थी। किसी को मारने पर पानी की तरह लचकती थी इसलिए टूटने का सवाल ही नहीं उठता था।

मैं अपनी मिर्जापुरी लाठी को कहीं भी जाते, उठते – बैठते, सोते – जागते साथ में लिए रहता था। वह मेरी संगिनी थी। जानवरों से डर नहीं लगता था इसलिए कि, मैं मिर्जापुरी लाठी साथ में रखता था। लाठी हर घड़ी मेरे साथ रहती थी।

मैं नहाने के बाद अपने शरीर में तेल लगाने से पहले अपनी मिर्जापुरी लाठी में चकाचक तेल लगा दिया करता था। तेल लगने से मेरी लाठी लाल हो गई थी। तेल लगने से बहुत सुंदर, चमकती थी मेरी लाठी!

लाठी मेरी पहचान बन गई थी। यद्यपि मेरी विचारधारा बचपन से ही अहिंसात्मक थी, फिर भी समय, क्षेत्र में ढलना पड़ा था। यह मेरी मिर्जापुरी लाठी लोगों के निगाहों में भी चढ़ चुकी थी क्योंकि, ऐसी लाठी गांव में कम लोगों के पास थी।

रात में खेतों की रखवाली करते समय यह लाठी मुझे संबल प्रदान करती थी, एक अजीब सा आत्मविश्वास दिल में रहता था। सांप मिल जाता तो भी लाठी के बल पर डर नहीं लगता था। रात के अंधेरे में भी मेरी मिर्जापुरी लाठी साथ होने से कोई भय नहीं रहता था।

जंगली सुअरों से भी भयमुक्त होकर खेतों की रखवाली करता था। रोज, सांभर के सामने भी नहीं डरता था। बहुत सालों तक यह मेरी मिर्जापुरी लाठी मेरे साथ ही रहा करती थी।

बढ़ती नदी में इस पार से उस पार जाने में यह मेरी मिर्जापुरी लाठी सहायक हुआ करती थी।

धोती का तहमक लगाकर ऊपर सफेद कुर्ता पहनकर, कांधे पर मिर्जापुरी लाठी रखकर निकलने पर एक अजीब साहस रहता था।

एक बार गर्मी के महीने में कुछ लोग जंगली सुअरों को दौड़ाकर मारने के फिराक में थे। हम ठहरे मिर्जापुरी लाठी वाले हम सावधान हो गए थेय तभी वह सुअर दौड़ता हुआ आया, सामने एक युवक तहमक लगाकर खड़ा था। हम कैसे मारते, उस युवक को लग जाती तो समस्या हो जाती, सुअर हल्का सा था, न छोटा न बड़ाय मंझोला, घेल्ला था। सुअर भी समझ नहीं पाया था कि कहां से जाऊं, क्या करूं!

वह सुअर दौड़ता हुआ मेरे सामने खड़े युवक के टांगों के बीच से निकलना चाहय वह उसके तहमक में उलझा तो रफ्तार कम होना स्वाभाविक था, वह युवक चित गिर गया था। सुअर आगे बढ़ा तो मैंने अपनी मिर्जापुरी लाठी का इस्तेमाल कियाय मैंने अपनी पूरी ताकत भर अपनी मिर्जापुरी लाठी उस सुअर बालक के ऊपर छोड़ दिया था। मेरी मिर्जापुरी लाठी आधी उसपार दूर छिटक कर गिरी, आधी मेरे हाथ में रह गई थी, जैसे आधी आबादी किसी नेता के हाथ से छूट गई हो, ऐसा दुख मुझे हुआ था, मेरी मिर्जापुरी लाठी के टूटने से!

मैं चित पड़े युवक, अपने हमजोली को उठाना भूल गया थाय अपनी मिर्जापुरी लाठी के टूटने के गम से! जबतक मैं उसकी तरफ ध्यान करता, वह धूल झाड़ता हुआ उठकर बैठ गया था।

वह सुअर मेरी मिर्जापुरी लाठी के वार से जरा भी नहीं रुका था, वह भाग गया था। उस युवक से मैंने पूछा, 'चोट तो नहीं आई?'

गांव रिश्ते से वह भतीजा लगता था, उसने कहा, 'नहीं चाचा, यह सुअर जाति के सिर में लाठी लगती तो कुछ असर होता, आपकी लाठी टूट गई फिर भी उसे तनिक भी फर्क नहीं पड़ा!'

अब मुझे बहुत फर्क पड़ा था। मुझे इस मिर्जापुरी लाठी से घृणा सी हो गई थी। मैं हथियारों के खिलाफ पहले से था, अब मैंने अपनी मिर्जापुरी लाठी को त्याग कर कलम पूरी तरह से उठा लिया था। कलम का इस्तेमाल मैं इस घटना के पहले भी करता था, अब तो मेरी कलम में एक अलग हिम्मत, एक अलग पहचान, अलग निखार आ गई थी, जो अब – तक निरंतर जारी है।

हथियार अपराध रोकने का बस काम नहीं करते, हथियार अपराध करते हैं।

मैं अपनी मिर्जापुरी लाठी के दोनों टुकड़े उठाकर चला आया था, घर की ओर! जिस मिर्जापुरी लाठी की बहुत खुशामद करता था मैं, उससे नफरत सी हो गई थी मुझे! मैंने घर आकर दोनों टुकड़ों को पटक दिया था। घर के दरवाजे पर बन रही छानी में लड़कों ने उसे लगा दिया था, जो आज बहुत सालों बाद वह निकाल दी गई थी।

हो सकता है उसे फिर से छानी में लगा दिया जाए या ठंड के मौसम में आग के हवाले कर दिया जाए!

कुछ भी हो एक बार फिर से मुझे अपनी बीती हुई जिंदगी के बारे में यह मिर्जापुरी लाठी के टुकड़ों ने याद दिला दिया था।

❐

स्विस फिल्म 'डायरी ऑफ अ वुमन' का ट्रेलर जारी, 12 सितंबर को होगी रिलीज

मुंबई ब्यूरो, स्विस मनोवैज्ञानिक ड्रामा 'डायरी ऑफ अ वुमन' का ट्रेलर जारी हो गया है और यह स्विस फेडरल ऑफिस ऑफ कल्चरल और स्विस फिल्म्स के सहयोग से 12 सितंबर को रिलीज होगी। साइमन एबी द्वारा लिखित और निर्देशित, रेमो मुगली, साइमन एबी, एंजेलो बोफो द्वारा निर्मित और साइमन एबी फिल्म्स और स्नाइडर फिल्म्स के बैनर तले बनी यह फिल्म जय विरात्रा एंटरटेनमेंट लिमिटेड द्वारा भारत भर के सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी।

'डायरी ऑफ अ वुमन' एलेक्स डार्कली के चरित्र पर केंद्रित है, जो एक अधेड़ उम्र की शिक्षिका है और अपने कष्टमय अतीत से जूझ रही है। यह फिल्म एलेक्स के एलेक्सा में रूपांतरण की कहानी कहती है, जिसमें यह दिखाया गया है कि कैसे सामाजिक अस्वीकृति और बचपन का आघात उसके मानस को आकार देता है और अंततः उसे निराशा की ओर ले जाता है। एलेक्स का किरदार मार्सेल श्नाइडर ने निभाया है, ओल्गा डिनिकोवा उसकी माँ की भूमिका में हैं, और फ्लोरेंस माटूसेक, एलेक्स की प्रेमिका, जो उसके सबसे बुरे दौर में थी, की भूमिका निभा रही हैं।

डायरी ऑफ अ वुमन ने लैंगिक पहचान, मानसिक स्वास्थ्य और मानवीय स्वीकृति की आवश्यकता के चित्रण के लिए आलोचनात्मक ध्यान आकर्षित किया है। लेखक और निर्देशक साइमन ऐबी ने फिल्म की कहानी पर अपना दृष्टिकोण साझा करते हुए कहा कि डायरी ऑफ अ वुमन केवल परिवर्तन की कहानी नहीं है, बल्कि यह समाज द्वारा अस्वीकार किए गए और अपने करीबी लोगों द्वारा गलत समझे गए व्यक्तियों द्वारा सामना किए जाने वाले भावनात्मक संघर्षों का एक लेंस है। यह साहस, दर्द और आत्म-स्वीकृति की आशा की कहानी है।

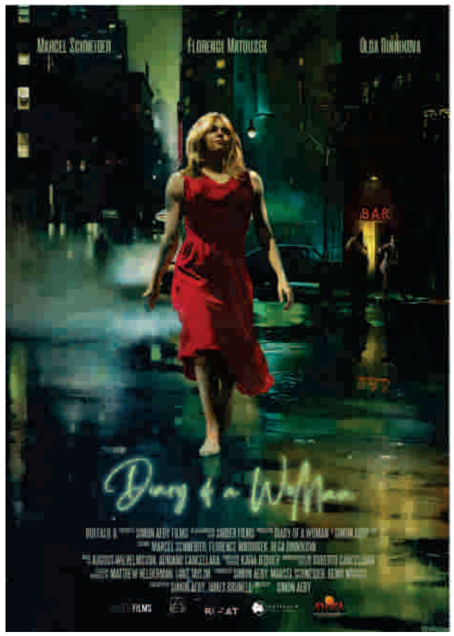

अवधारणा से लेकर पूर्णता तक, फिल्म की यात्रा एलेक्स की आंतरिक दुनिया में गहराई से उतरने के लिए समर्पित एक टीम द्वारा आकार दी गई है। एड्रियानो कैंसेलरा ने शीर्षक गीत की रचना की है और फिल्म का संगीत ऑगस्ट विल्हेल्मसन द्वारा रचित है। मार्कस मोल और कैथरीना फेनिंग ने ध्वनि-मिश्रण का दायित्व संभाला है। फिल्म की ध्वनि इसकी मनोवैज्ञानिक तीव्रता को बढ़ाने के लिए डिजाइन की गई है। सिनेमैटोग्राफर रॉबर्टो कैंसेलरा ने दृश्यों को खूबसूरती से कैद किया है, जो एलेक्स के मानसिक संघर्ष को एक ऐसी पृष्ठभूमि में दर्शाते हैं जो उसके भीतर के वीरानी को दर्शाती है।

मुख्य अभिनेता मार्सेल श्नाइडर ने कहा, 'हमें उम्मीद है कि डायरी ऑफ अ वुमन भारत और उसके बाहर के दर्शकों पर गहरा प्रभाव डालेगी। यह फिल्म पहचान और स्वीकृति से जुड़े ऐसे सवाल उठाती है जो सार्वभौमिक हैं।'

डायरी ऑफ अ वुमन एक गहन और विचारोत्तेजक अनुभव का वादा करती है। मार्सेल श्नाइडर ने एलेक्स और एलेक्सा, दोनों की भूमिकाएँ निभाते हुए एक अद्भुत, ऑस्कर-योग्य काम किया है, और वह फिल्म के लगभग हर दृश्य में मौजूद हैं। 12 सितंबर को देश भर में रिलीज होने वाली इस फिल्म का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य, लैंगिक पहचान और व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करने वाली सामाजिक संरचनाओं के बारे में व्यापक बातचीत शुरू करना है। ❐

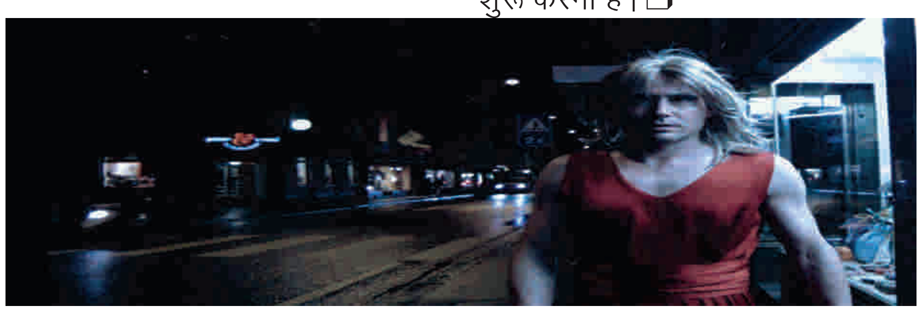

अहान शेट्टी भारत की पहली राष्ट्रीय त्रासदी से प्रेरित हॉरर फिल्म में अभिनय करेंगे

मुंबई ब्यूरो, अहान शेट्टी भारत की पहली वास्तविक राष्ट्रीय त्रासदी से प्रेरित हॉरर फिल्म का निर्देशन करेंगे, जिसका निर्माण ख्याति मदान की नॉट आउट एंटरटेनमेंट और प्रशांत गुंजालकर करेंगे। 2026 की शुरुआत में शुरू होने वाली यह फिल्म भारत की पहली वास्तविक राष्ट्रीय त्रासदी से प्रेरित हॉरर फीचर फिल्म है।

इसकी पटकथा पैट्रिक ग्राहम ने लिखी है, जिन्होंने भारत में दो हॉरर सीरीज, घोल और बेताल, बनाई हैं, जिन्हें ब्लमहाउस टेलीविजन के बैनर तले बनाया गया है। ब्लमहाउस टेलीविजन, गेट आउट, द पर्ज और पैरानॉर्मल एक्टिविटी जैसी प्रतिष्ठित हॉरर फिल्मों का वैश्विक पावरहाउस है।

अहान ने अपनी पहली फिल्म तड़प से अपनी पहचान बनाई, जो एक जबरदस्त रोमांटिक ड्रामा थी और जिसने साजिद नाडियाडवाला के लिए बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त सफलता हासिल की। अब वह सनी देओल, दिलजीत दोसांझ और वरुण धवन अभिनीत, बड़ी बजट वाली फिल्म बॉर्डर 2 में नजर आएंगे, जो गणतंत्र दिवस 2026 पर रिलीज होने वाली है। यह देशभक्ति ड्रामा अगले साल की सबसे बड़ी थिएटर फिल्मों में से एक बनने के लिए तैयार है।

अपनी मौजूदा फिल्मों से एक महत्वपूर्ण बदलाव के साथ, यह नई फिल्म अहान को एक मनोरंजक फिल्म में पेश करती है, जिसमें हॉरर और एक शक्तिशाली प्रेम कहानी का मिश्रण है, जो एक मनोरंजक थ्रिलर कथा पर आधारित है। एक वास्तविक ऐतिहासिक त्रासदी पर आधारित भारत की पहली हॉरर फिल्म के रूप में स्थापित, यह अभिनेता के लिए एक साहसिक बदलाव का भी प्रतीक है।

शीर्षक, जिसे विशेष रूप से दिलचस्प बताया जा रहा है, जल्द ही सामने आएगा। कथानक और निर्देशक की जानकारी अभी भी गुप्त है, निर्माता एक बड़े थिएटर हॉरर अनुभव का समर्थन कर रहे हैं जिसका हिंदी सिनेमा लंबे समय से इंतजार कर रहा है। महिला प्रधान की घोषणा जल्द ही होने की उम्मीद है।

इस फिल्म का निर्माण ख्याति मदान ने अपने बैनर नॉट आउट एंटरटेनमेंट के तहत और प्रशांत गुंजालकर ने किया है। रेड चिलीज एंटरटेनमेंट, डिजनी इंडिया और मैडॉक फिल्म्स जैसे स्टूडियो के साथ अपने दशक भर के काम के लिए जानी जाने वाली मदान ने इस साल की शुरुआत में नॉट आउट एंटरटेनमेंट लॉन्च किया, जिसका स्पष्ट मिशन शैली–परिभाषित कहानी कहने के माध्यम से थिएटर हिंदी सिनेमा को पुनर्जीवित करना है। उनकी सूची में पहले से ही अभूतपूर्वा, एक रोमांटिक हॉरर कॉमेडी और प्रशंसित फिल्म निर्माता हबीब फैसल द्वारा निर्देशित एक स्लाइस–ऑफ–लाइफ ड्रामा शामिल है, जिन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता दो दूनी चार और इश्कजादे के निर्देशन के लिए जाना जाता है। पल्स एंड पीयर्स के संस्थापक गुंजालकर प्रतिभा प्रबंधन, ब्रांड सहयोग और इवेंट–आधारित मनोरंजन में दशकों का अनुभव रखते हैं। ❒

मेल बॉक्स

बोलो जिंदगी

के पाठक हमसे सीधा सम्पर्क करें।

नीचे दिये गये ई-मेल के माध्यम से हमे बतायें कि उन्हें कौन सा आलेख ज्यादा पसंद आया।

क्या कमियां हैं

और उनके क्या सुझाव हैं।

E-mail : bolozindagi@gmail.com

बोलो जिंदगी

पत्रिका में विज्ञापन के लिए हमसे संपर्क करें।

Mob.: 7903935006 / 9122113522

E-mail : bolozindagi@gmail.com

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएँ